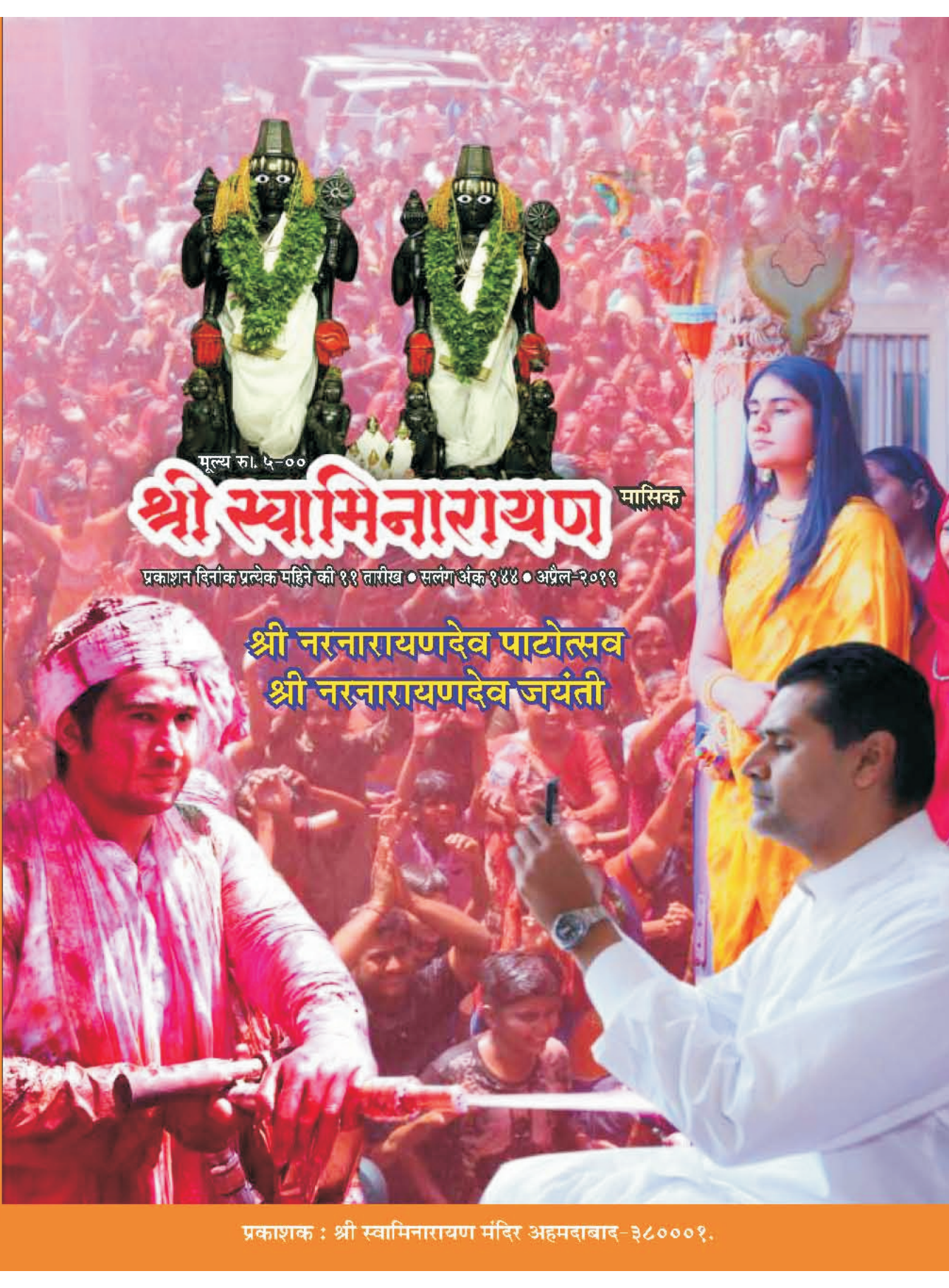

मूल्य रु। ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १४४ • अप्रैल-२०१९

श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव
श्री नरनारायणदेव जयंती

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

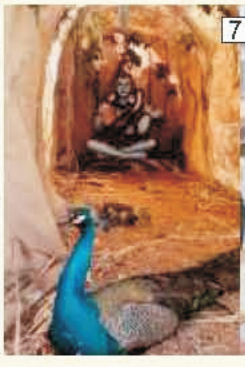

(१) जेतलपुर स्वामिनारायण मंदिर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव के अवसर पर अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री और दर्शन का लाभ उठाते हुए हरिभक्त ।(२) जेतलपुरधाम में गंगामां के घर दर्शन के लिये खोलते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) न्यु राणीप मंदिर के ३४ वें पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) मोटेरा मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर अन्नकूट की आरती उतरते प.पू. आचार्य महाराजश्री । (५) बालासिनोर मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(६) श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकोरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(७) करांची (पाक.) अपने मंदिर में शिवरात्रि महोत्सव मनाते श्री नरनारायणदेव के युवा हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १२ ● अंक : १४३
मार्च-२०१९

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	प्रादुर्भाव के पहले	०६
०४.	भक्ति तनय का शरण मिला है	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से सर्व जीव हितावह अमृत वचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	सत्संग बालवाटिका	१६
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२२

अस्मदीयम्

इस संसार में कई स्त्रियो के पति मर जाते है तो वह छाती पीट-पीटकर रोती है। और कई स्त्रियाँ ऐसी भी होती है जो अपने विवाहित पति का त्याग करके भगवान का भजन करती है। इसी तरह कई पुरुष होते है जिनकी स्त्री मर जाती है तो वह उसकी याद में रोता रहता है तथा दूसरे स्त्री के लिये परेशान रहता है। कई वैरागी पुरुष घर में विवाहित स्त्री को छोडकर परमेश्वर की भजन करते है इसी प्रकार लोगो का ईश्क अलग-अलग प्रकार का होता है।

"हमारा तो एक ईश्क है और एक ही सिद्धान्त है। तपस्या करके भगवान को खुश करना, भगवान तो सभी का भला करने वाले और स्वामी और सेवक भाव से भगवान की भक्ति करना तथा भगवान की उपासना किसी भी प्रकार से खंडित नही होनी चाहिए। इस लिये आप सभी हमारे वचन को परम सिद्धान्त मानना।" (व.का.-१०)

हमें समझ-समझकर यह ज्ञात हुआ है। यदि उपासना कच्ची होगी तो हमारा भला नहीं होगा। उपासना की नीव दृढ रखना चाहिए। इसमें ढिलास नही होनी चाहिए।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१९)

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर भक्तिनगर (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

७-८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) कथा-पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेवका १९७ वाँ पाटोत्सव महोत्सव स्वयंम् के कर कमलो द्वारा सम्पन्न किये।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप पाटोत्सव पर आगमन।

१७ अडालज गाँव में प.भ. राकेशभाई महेन्द्रभाई (शिकागोवाले) के वहाँ आगमन।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मकनसर (मूली देश) ठाकुरजीकी आरती उतारना वहाँ से वघासिया नूतन मंदिर का भूमि पूजन हेतु आगमन।

२० श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव रंगोत्सव स्वयं के हाथो से उल्लास पूर्वक मनाये।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर टिम्बा (मूली देश) पाटोत्सव अवसर पर समाजकी वाडी के भूमि पूजन के अवसर पर आगमन।

२३ निकोल श्री स्वामिनारायण मंदिर पर आगमन वहाँ से चिलोडा गाँव में पधारना।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव पर आगमन।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१९)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरुज में आगमन।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु (बहनों का) खात मुहूर्त के अवसर पर आगमन।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव १९७ वें पाटोत्सव को स्वयं के कर कमलो द्वारा पूर्ण किये।

२० कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती फूल दोलोत्सव रंगोत्सव स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

प्रादुर्भाव के पहले

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

जो असुर भगवान के साथ प्रबल वैरभाव रखते हुए भगवान का सतत स्मरण वाला होकर मृत्यु प्राप्त करते है। तथा जो असुर अंतिम समय में भगवान का दर्शन करके मृत्यु प्राप्त करते है तो वे सभी असुर मुक्ति प्राप्त करते है। लेकिन उपरोक्त दोनो वृत्तियो के अलावा तथा पंच विषयक भोग की तीव्र तृष्णा वाले व्यक्ति मृत्यु प्राप्त करता है तो भगवान भक्तो को दुःखी करने के लिये पुनः अवसर पुर्नः जन्म लेता है।

महाभारत के मतानुसार समुद्रमंथन से निकला अमृत देवता ले लेते है। तब भगवान श्री नरनारायणदेव मोहिनी का रुप धारण करके दानवो को मोहित कर देते है। तथा अमृत का पान देवताओ को कराते है । इस प्रकार अपने साथ श्री नरनारायणदेव के द्वारा अन्याय होने पर दानवो ने देवताओ के साथ भयंकर युद्ध किये। यही युद्ध देवासुर संग्राम के नाम से जाना जाता है। भगवान देवताओ की रक्षा के लिये श्री नर भगवानने शांर्गधनु, तथा श्री नारायण भगवानने सुदर्शन चक्र धारण करके दानवो को पराजित किये थे । श्री नरनारायण भगवान देवताओ का पक्ष लेने के कारण दानव भगवान के प्रिय भगवान भक्तो को दुःखी करने के लिये पुर्नजन्म लिये थे।

श्रीमद् भागवत पुराण (१०/१०/४३-४४) कहता है कि ''प्राचीन काल में देवासुर संग्राम के समय, कई भयानक असुर मारे गये थे। वे मनुष्य योनि में जन्म लिये तथा अभिमान से प्रजा को सताने लगे । (४३) उनका दमन करने के लिये भगवान की आज्ञा से देवतालोग यदुवंश में अवतार लिये थे। परीक्षित ! उनके कुल की संख्या १०१ है।(४४)

इस प्रकार पुर्नजन्म पाने वाले दानवो के संसार के लिये भगवान की आज्ञा से सभी देवता यदुवंश में जन्म लिये । भागवत (१०/८९/६०) (४/३/५९), महाभारत (आदि पर्व-२३३/१८-९) (सपर्व ४७/१०) उद्योग पर्व (४९/१९-२०) (शांति पर्व ३४/३७/ के अनुसार भगवान श्री नारायण श्री कृष्णरुप में तथा भगवान श्री नर अर्जुनरुप में प्रगट हुए। भगवान श्री कृष्ण कई असुरो का संहार किये तथा महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण तथा श्री अर्जुन के साथ मिलकर कई असुरो का नाश किये । भगवान श्री नरनारायणदेव के रुप में ऐसे श्रीकृष्ण तथा अर्जुन के द्वारा मारे गये असुर भगवान के प्रिय भक्तो को दुःखी करने के लिये पुनः जन्म लिये थे।

मया कृष्णेन निहताः सार्जुनेन रणेषु ये।
प्रवर्तयिष्यन्त्यसुरास्ते त्वधर्मं यदा क्षितौ ॥४२॥
धर्मदेवात्तदा मूर्तौ नरनारायणात्मना।
प्रवृत्तेऽपि कलौ ब्रह्मन् ! भूत्वाहं सामगो द्विजः ॥४३॥
मुनिशापान्नृतां प्राप्तं सर्षि जनकमात्मनः।
ततोऽविता गुरुभ्योडहं सद्धर्मं स्थापयन्नज ! ॥४४॥

(स्कंदपुराण-विष्णुखंड-वासुदेव माहात्म्य-अध्याय-१८)

''हे ब्रह्मन ! अर्जुन के साथ मेरे द्वारा युद्ध में मारे गये असुर जब पृथ्वी पर अधर्म फैलायेगे तब कलियुग में सामवेदी विप्ररुप धर्मदेव तथा मूरति से नरनारायण रुप में प्रगट होगे। हे ब्रह्मन ! तब सद् धर्म की स्थापना करते हुए। मुनि के श्राप से मनुष्य भाव को प्राप्त करने वाले ऋषि-मुनियो सहित धर्म भक्ति का अंश गुरुराजा के रुप में रक्षा करुँगा।(४२-४३-४४)

वासुदेव महात्म के १८ वे अध्याय में अध्ययन करकने से ज्ञात होता है कि भगवान बुद्ध के पश्चात तथा भगवान कल्कि से पहले जो नरनारायण स्वरुप का भगवान के चौदहवे अवतार का वर्णन है । वह कलियुग में सामवेदी ब्राह्मण ऐसे श्रीहरिप्रसादजी (श्रीधर्मदेव) तथा श्री मूर्ति देवी (श्री भक्तिमाता) के यहाँ छपैया में प्रगट हुए भगवान श्री स्वामिनारायण पूर्ण रुप में बताया गया है। दूसरे शास्त्रो में भी भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रादुर्भाव का गूढ वर्णन दिखाई देता है। जैसे कि

स्वामिनारायणोऽस्माकमास्ते श्री वेंकटाचले ॥
कदाचिदवयमारुह्य हंसशुकं मनोजवम् ॥९॥

(स्कंदपुराण-वैष्णवखंड-वेंकटद्रिमाहात्मय अ.७)

श्री वेकेंट पर्वत वाली भारतभूमि पर किसी समय में हम समान शुक (परमहंस के समान पवित्र) मन समान वेग वाले

(कामदेव को भगाने वाले) घोडा के उपर विराजमन होकर हमारे (स्वामिनारायण भगवान विचरते होगे तथा

तारह्यात्पूर्वकं डेडन्तं नारायणपदं भवेत् ॥
अष्टाक्षरो मनुश्चाऽस्य साध्यो नारायणो मुनिः ॥३॥

(बृहन्नारदीय पुराण-पूर्व खंड अ.-७०)

''तारहत्'' पद पहले रखकर 'नरनारायण' पद रखने से आठ अक्षर वाला ''तारहन्नारायणाय'' मंत्र बना है । उसमें 'नमः जोडते दश अक्षरवाला मंत्र बनता है । अर्थात माया के विस्तार को हरने वाले नारायण को नमस्कार' ऐसा बोलकर ''श्री नारायणमुनि'' भगवान को साथ ले ।इसी प्रकार

विष्णु सहस्त्र नामसु - नरः कृष्णो
हरिधर्मनन्दनो धर्म जीविकाः ॥१७५॥

(पदमपुराण-उथ्तरखंड अ.-७२)

विष्णु सहस्त्रनाम में कहा गया है कि ''धर्म को जीवित रखने वाले मनुष्य रुप हरिकृष्ण नंदन भगवान है।

श्रीमद् भागवत पुराण में स्वयं श्रीकृष्ण भगवानने कहा है कि

अन्योऽपि धर्मरक्षायै देहः सम्भ्रियते मया ।
विरामायाऽप्यधर्मस्य काले प्रभवतः क्वचित् ॥

(भागवत - १०/५०/१०)

''धर्म की रक्षा करने के लिये और कालान्तर में बढते अधर्म के नाश हेतु मैं दूसरी शरीर धारण करुगा ।''

कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति सम्भवम् ।
कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणाः ॥

(भागवत - ११/५/३८)

सतयुगमें जन्म लेने वाले व्यक्ति कलियुग में जन्म लेने की ईच्छा रखते है । कारण कलियुग में मनुष्य वास्तव में नारायण परायण होगे ।''

किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुल्कसा आभीरकङ्का यवनाः
खसादयः।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुद्धयन्ति तस्मै प्रभविष्णवे
नमः ॥

(भागवत - २/४/१८)

आन्ध्र, पुलिन्द, पुल्कय, आभीर, कंक, यवन, खश इत्यादि निग्न जातियाँ तथा दूसरे पापी लोग जिसके शरण में पवित्र हो जाता है । उस सर्व शक्तिमान भगवान को बार-बार प्रणाम करता हूँ ।

श्रीमद्भगवतगीता में कृष्ण भगवान कहते है कि

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

(श्रीमद्भगवत गीता - ४/७)

हे भारत ! (अर्जुन) जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृत्ति बढ जाती है तब तब में अपने रुप को धारण करता हूँ । अर्थात लोगो के समक्ष प्रगट होता है ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

(श्रीमद्भगवद गीता - ४/८)

सज्जन पुरुष का कल्याण करने के लिये, पापीयो का विनाश करने के लिये । धर्म की सम्यक स्थापना करने के लिये में युग युग में प्रगट होता हूँ ।

संतो का ऐसा मानना है कि भागवत में तथा गीता में जो संकेत है वह साक्षात् भगवान श्री स्वामिनारायण परमात्मा के लिये है ।

इस प्रकार कई शास्त्रो में पुराणो में भगवान प्रागट्य की पूर्व भविष्यवाणी को गूढ रुप से वर्णन किये है । लेकिन भगवान को पहचानने के लिये ऐसा कोई नियम नही है कि शास्त्रो पुराणो में उल्लेख ही हो । क्योकि कई अवतार विना भविष्यवाणी हुए भी हुआ है । लेकिन शास्त्र गूढ अर्थ में अपना अभिप्राय स्पष्ट करता है । वास्तव में भगवान का अप्रतिम ऐश्वर्य दर्शन से जान और पहचान सकते है ।

उद्धव सम्प्रदाय के सभी परमहंसो, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, भक्तचिंतामणी, श्रीहरि दिग्विजय, श्रीहरिलीला कल्पतरु आदि सभी ग्रन्थो में भगवान स्वामिनारायण के प्रादुर्भाव के विषय में वर्णन और लिखते है, बद्रिकाआश्रम में भगवान श्री स्वामिनारायण देव के मुँह से अमृत पान कराने में निमग्न होने के कारण श्री धर्मदेव, श्री भक्तिमाता, श्री उद्धवजी तथा मसियादिक ऋषियो ने जब दुर्वासा ऋषि का सन्मान नही किया गया । तब दुर्वासा ऋषिने सभी को श्राप देकर भरत खंड में जन्म लेकर असुरो द्वारा कष्ट पायेगे । तथा बताये कि उनमके श्राप के निवारण हेतु श्रीनरनारायणदेव भी भरतखंड में प्रगट हुए । मनुष्य भाव पाकर सभी लोगो को मेरे श्राप से मुक्तकरेगा ऐसा बताये थे ।

भक्ति तनय का शरण मिला है

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

प्रार्थना स्तोत्र - वसंततिलका वृत्तम् अखंडानन्द वर्णी कृत्

हे नीलकंठ शरणागतजीवपालं संसारसिंधु पतितोद्धरणैककृत्यम् ।
स्वानां सुखं वितरितुं धृतनैकरुपं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयं शरणं हरिं त्वाम् ॥१॥
स्वामिन् सदाऽतिकरुणार्द्रविलोचनाब्जं स्वातिप्रियोद्धवमताब्जविकासनार्कम् ।
पाखंडखंडनपटं स्वजनार्द्रचितं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥२॥
मुक्तिप्रदं भवभयार्तजनस्य बंधुम् धर्माढ्यभक्तिपथपोषणतत्परं च ।
भक्तप्रियं सुरनराधिपवंद्यपादम् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥३॥
नारायणं धृतमनोहरवर्णिवेषम् धर्मं च नैष्ठिकमिह प्रथयंतमाद्यम् ।
तापत्रयाभिभवकारिगुणानुवादं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥४॥
शर्मप्रदातुमवनौ स्वसतामदभवम् हंतुं च तत्प्रतीपदुष्टजनान्सदीशम् ।
भक्तौ वृषाद्धृतशुभांगमजं रमेशं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥५॥
यस्येक्षणं स्मरणकीर्तनवंदनानि प्रीत्याहृणं श्रवणमाशु हरंति पापम् ।
मोक्षं दिशन्तिभवपाशनिबंधनातम् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥६॥
यस्याश्रयादवरजंतुरपि स्वपापं हित्वाप्य देववरणीयमथ स्वरुपम् ।
एत्यक्षरे निवसनं तमतीत्य विध्वान् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥७॥
दीनानुकंपितमरं शरणागताघस्तोमम् गुणज्ञ न गणय्यगुणम् तदीयम् ।
अप्यल्पमीश सुभगं बहु मन्यमानम् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥८॥
संसारसिंधुपतितस्य निजाधतः स्वप्रारब्धकर्म परिभुक्तवतोऽल्प बुद्धैः ।
वीक्ष्य स्वयं स्वबिरुदं कुरु मे भवाब्धेरुदधारमार्तिहरणं प्रणामाम्यहं त्वाम् ॥९॥

अखंडानंद वर्णी इस स्तोत्र में अपने ईष्टदेव परमब्रह्म परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की भाव विभोर होकर प्रार्थना करते है। सम्प्रदाय में प्रचलित महापूजा की विधिवर्णिराज अखंडानंदजीने अपने ग्रन्थ में हरिचरित्र नामक संस्कृत भाषा में रचित है उस में वर्णन भी है। जिसकी प्रसिद्धि और प्रचार अ.स. श्री गोपालनंद स्वामी के आज्ञा से विशेष हुआ है । वह श्रीहरि को अति प्रिय है कारण इस महापूजा की विधिश्रीमद्भागवत और श्री वासुदेव महात्म में भी वर्णन करके एकान्तिक भक्तो को हमेशा करने की आज्ञा दी है । इस कारण से उद्धव संप्रदाय की नियमानुसार रचना की गयी है। ये महापूजा और श्रीहरि की प्रार्थना इस तरह करने के लिये इस अष्टक स्त्रोत की रचना की गयी है। इसका अर्थ यह है कि हमें कितने बड़े भगवान मिले है, उन शब्दो का अर्थ समझने का प्रयत्न करें।

हे नीलकंठ शरणागतजीवपालं संसारसिंधु पतितोद्धरणैककृत्यम् ।
स्वानां सुखं वितरितुं धृतनैकरुपं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयं शरणं हरिं त्वाम् ॥१॥

हे नीलकंठ नामधारी परमात्मा आप का स्वभाविक स्वभाव है कि आपकी शरण में आया कोई भी जीव सुपात्र या कुपात्र हो उस पर विना विचार किये हुए जीव मात्र की रक्षा करते है। संसार सागर में डूबकी लगाते अर्थात् मायावी दुख और कष्टो को भोगते हुए जीवो की उद्धार के लिये पृथ्वी पर अवतरित होने का मात्र एक कारण है। अवतार लेने का कारण है। जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय क्रिया भी भगवान जीवो के हित के लिये करते है। अपने सृजित संसार में स्वयं अनेक रुप धारण करते है। बार-बार अवतार धारण करते है। जहाँ जिस रुप की आवश्यकता होती है वहाँ उस रुप को धारण करते है तथा जीव का कल्याण करते है। ऐसे दयालु जगत जननी माता भक्तिदेवी के पुत्र रुप में कलियुग में प्रगट होकर स्वयं परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि की शरण में प्राप्त होते है और शरणागत बनते है।(१)

स्वामिन् सदाऽतिकरुणार्द्रविलोचनाब्जं स्वातिप्रियोद्धवमताब्जविकासनार्कम्।
पाखंडखंडनपटं स्वजनार्द्रचितं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥२॥

हे स्वामी सभी के नियन्ता सभी के कर्ता-हर्ता सर्व व्यापी प्रभु आप सदैव जीवमात्र उपर अतिशय करुणा मयी ने तो से दया करुणा के कारण द्रवित बन गये है। गीले हो गये है। अर्थात् आँखो से आँसु निकल बहा है। ऐसे नेत्र कमल से प्रेम वात्सल्य के सागर हो ऐसा दिखाई देता है। स्वयं के सखा जैसे उद्धवजी अपनी आज्ञा से जगत में पवर्तक एकेश्वर उपासना का ज्ञान का पोषण करते है। उसे पैलाते है। संसार में दिखाई देने वाले आडम्बर रुपी पाखंड का खण्डन करके अति कुशलता का परिचय देते है। स्वयं के एकान्तिक भक्तो की समझ से जिनका हृदय सदैव करुणा से भरा रहता है। ऐसे दयालु जगत जननी जगत

माता भक्ति देवी के पुत्र रुप में इस कलियुग में प्रगट हुए स्वयं परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि के शरण में जाता हूँ। और मुझे शरण में ले।(२)

मुक्तिप्रदं भवभयार्तजनस्य बंधुम् धर्माढ्यभक्तिपथपोषणतत्परं च ।
भक्तप्रियं सुरनराधिपवंद्यपादम् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥३॥

हे परमेश्वर श्रीहरि आपकी शरण में आने से मोक्ष प्राप्त होता है। जन्म-मरण से व्याकुल जीवो के सच्चे बंधु है। मुमुक्षु को सत्यमार्ग जो धर्म सहित भक्ति करके भगवान को प्राप्त करने का सरल उपाय उपदेश दिये है। भक्तो को आप प्रिय है। भक्त को आप प्रिय है। जिस के चरणो की सेवा बड़े बड़े राजा-महाराज सिद्ध और तपस्वी करते है ऐसे दयालु जननी जगतमाता भक्ति देवी के पुत्ररुप में कलियुग में प्रगट हुए है। स्वयं परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि के शरण को प्राप्त होते है। और शरणागत बनते है।(३)

नारायणं धृतमनोहरवर्णिवेषम् धर्मं च नैष्ठिकमिह प्रथयंतमाद्यम् ।
तापत्रयाभिभवकारिगुणानुवादं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥४॥

बद्रिकाश्रम में तप करने नरनारायण ऋषि दुर्वासा ऋषि का श्राप स्वीकार करके नारायण साक्षात अभी मनुष्य रुप धारण करके विचरण करते है। जो अति मनोहर वर्णी के बटुक ब्रह्मचारी का वेश धारण किये है। अति कठिन और महान जो नैष्ठिक ब्रह्मचारी का धम पालन करके संसार को अच्छे मार्ग पर लाते है। आप के गुणो का गान करने से तीनो प्राकर के दुख कायिक वाचिक एवम् मानसिक नाश होता है। ऐसे दयालु जगत जननी जगमाता भक्त पुत्र रुप में इस कलियुग में प्रगट होकर स्वयं परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि की शरण प्राप्त हुए है। और शरणागत बनाते है।(४)

शर्मप्रदातुमवनौ स्वसतामदभवम् हंतुं च तत्प्रतीपदुष्टजनान्सदीशम् ।
भक्तौ वृषाद्धृतशुभांगमजं रमेशं प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥५॥

स्वयं के अतिप्रिय भक्तो को मोक्ष प्रदान करने के लिये सदैव अजन्मा होने के कारण उनका जन्म और कर्म सदैव दिव्य है। फिर भी सत्पुरुष ऐसे भक्तो को सुख देतने के लिये तथा धर्म विरोधी दुष्टो का नाश करने के लिये सभी के ईश, नियन्ता लक्ष्मीप्रति ऐसा परमेश्वर श्रीहरि स्वयं हरिप्रसाद विप्र जो धर्मदेव के नाम से प्रसिद्ध है। उनके आँगन में माता भक्ति देवी के पेट से मनुष्य देह धारण किये है। ऐसे दयालु जगत-जननी जगत माता भक्तिदेवी के पुत्र रुप में कलिकाल में प्रगत हो कर स्वयं परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि के शरण को प्राप्त होते है और शरणागत बनाते है।(५)

यस्येक्षणं स्मरणकीर्तनवंदनानि प्रीत्याहृणं श्रवणमाशु हरंति पापम् ।
मोक्षं दिशन्तिभवपाशनिबंधनातम् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥६॥

हे प्रभु आपका प्रेम पूर्वक दर्शन करे या स्मरण, वंदन, पूजा करे तथा गुणगान महिमा की कथा सुनते है। उसके सभी पाप मिट जाते है। भव सागर से पार हो जाते है। ऐसे दयालु जगत जननी जगतमाता भक्तिदेवी के पुत्र रुप में इस कलियुग में प्रगट हुए है। स्वयं परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि के शरण को प्राप्त किये है और शरणागत करते है।(६)

यस्याश्रयादवरजंतुरपि स्वपापं हित्वाप्य देववरणीयमथ स्वरुपम् ।
एत्यक्षरे निवसनं तमतीत्य विघ्नान् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥७॥

हे परमेश्वर आप के आश्रय करने मात्र से खराब से खराब जीव अधम से अधम व्यक्ति भी उंचे पद को प्राप्त कर सकता है। तथा मोक्ष प्राप्त करने वाले मार्ग में आनेवाले सभी प्रकार के विध्न अंतशत्रु, विषयवासना को जीतकर अविनाशी ऐसे अक्षरधाम में सदा महासुख प्राप्त करता है। ऐसे दयालु जगत जननी जगतमाता भक्तिदेवी के पुत्र रुप में कलिकाल में प्रगट स्वयं परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि की शरण प्राप्त किये और शरणागत को भी मिलता है।(७)

दीनानुकंपितमरं शरणागताघस्तोमम् गुणज्ञ न गणय्यगुणम् तदीयम् ।
अप्यल्पमीश सुभगं बहु मन्यमानम् प्राप्तोऽस्मि भक्तितनयंशरणंहरिं त्वाम् ॥८॥

आप की शरण में कोई दीन साधारण में साधारण गरीब जीव आता है उसके उपर दया करके करुणा से बड़े बड़े पापो के समुदाय को नष्ट कर देते है। उसमे यदि तोडा श्री सद्गुण होता है तो बडा मानकर स्वीकार लेते है। तथा अपने भक्तो को मोक्ष प्रदान करते है। ऐसे दयावान जगत जननी जगत माता भक्ति देवी के पुत्र रुप में कलिकाल में आकर। परमब्रह्म परमात्मा श्रीहरि के शरण में मिले है। और मुझे शरणागत करे।(८)

संसारसिंधुपतितस्य निजाधतः स्वप्रारब्धकर्म परिभुक्तवतोऽल्प बुद्धैः ।
वीक्ष्य स्वयं स्वबिरुदं कुरु मे भवाब्धेरुदधारमार्तिहरणं प्रणामाम्यहं त्वाम् ॥९॥

हे भगवान अपने ही कर्मो से इस संसार सागर में जन्म मृत्यु के चक्कर में स्थित जीव अपने कर्मो के कारण महान कष्ट और दुख भोगता है। वह साधारण अल्पबुद्धिवालो को ज्ञात नही वे मोक्ष मार्ग का उपाय भी नहि कर सकत् है। ऐसे जीवो का आप ही कल्याण कर सकते है। वर्णिराज कहते है कि हे प्रभु मेरे शरण में आये जीवो को भवसागर से जन्म-मरण के उबारियेगा। इस प्रार्थना के अलावा मेरे पास दूसरा कोई उपाय नही है। इस कारण से चरणो में साष्टांग दण्डवत प्रणाम करता हूँ। उसे आप स्वीकार करें।(९)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से सर्व जीव हितावह अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

माता और मातृभूमि स्वर्ग से प्यारी होती है। हमारी संस्कृति का मूल यदि है तो वह गाँव है। आज हमारे पास २-३ मंजिला वातानुकुलित सुविधा वाले पक्के मकान है। याद करे अपने बुजुर्ग देशी नलिया तथा हाथ से गारा से लिपे हुए मकान में रहते थे। एक दो कमरा, बगल में रसोई, चोकडी, होती है। आज हमारे पास भगवान के लिये संगमरमर के सिंहासन है। सोना का भी होता है। लेकिन उस समय कमरे में लिपा हुआ आता होता था। उस में भगवान की मूर्ति होती थी। फ्रेम आवश्यक नही था। उस समय था भी नही। ताखे में भगवान को दीपक अगबरबत्ती होती थी। ताखा धुए के कारण काला पड़ जाता था। लेकिन उस कालेपन में उजाला है। इस कारण से हम लोग यहाँ बैठे है। जिस रसोई में रोटी बनाती हुए मातायें अपने बच्चे-बच्चीयो को गोद में लेकर होते हुए सम्भाला तथा संस्कार दिये आज उनके कारण मंदिर की सीढ़ीयो पर चढ पाते है। देश-विदेश या कही भी बसे हो लेकिन इसकी जड कहाँ पर मिलती है इसे हमें भूलना नही चाहिए। यदि शास्त्र का सार है। पूर्वज ने जो संस्कार दिये है उसी के कारण हम लोग सुखी है। उस कर्ज से मुक्त नही हो सकते है। समय जाता है लेकिन अपनी बसीयत कभी भूलना नही चाहिए। साधारण में जो सुख है वह आडंम्बर में नही है।

अपने अस्तित्व के पीछे जो भी कारण हो ये अपने बुद्धि का काम नही है। हम लोगो को भगवान मिले है इसलिये सुखी है। हमें संस्कार, सद्‌बुद्धि, अच्छे विचार भगवान देते है। आप ३० सेकेन्ड मंदिर में भगवान के सामने खडे रहे। ३० मिनट गाँव के चौराहे के पास खडे रहे। विचारो में परिवर्तन आता है कि नही ? अधिक तो नही १०% बदलाव आता है। ३० मिनट में चौराहे पर सद्‌विचार नही आयेगा। ३० सेकेन्ड मंदिर के अन्दर सद्‌विचार अवश्य आयेगा। मंदिर की सीढ़ी उतरने के बाद जो होता है वह हम जानते है। लेकिन भगवान का सानिध्य अच्छा और उत्तम विचार का वातावरण देता है। यह सत्य बात है। यदि वातावरण अपने बच्चो को देना है। संस्कार किसी को भी थैली या बैग से निकलकर नही दे सकते है। संस्कार घर और परिवार के वातावरण से मिलता है। शेष दुनिया में हम देखते है। मंदिर की एक सीढी भी नही चढ सकते है। अपनी ही बात ले, एकादशी आने पर कहते है पूर्णिमा आने दो तो जायेगे। पूनम आने पर पुन: एक महीना आगे काम आ जाता है। महाराज प्रतिदिन शाम को मंदिर जाने की आज्ञा किये है। तो भी रुक जाते है ! यह अधिक कठिन है।

अपने कई गाँवो में हरि मंदिरो में श्रीजी महाराज की प्रसादी की मूर्तिर्या है। उसका कोई मूल्यांकन नही कर सकता है। गाँव में महाराज के समय का भक्तजनो का एक सत्य एवम् महत्वपूर्ण इतिहास जुडा है। यह इतिहास कही पर ही मिलता है। दंत कथाये काफी मिलेगी। इतिहास नही मिलेगा। इसलिये हमें गर्व करना चाहिए। अधिक तो नही लेकिन हम इस गाँव के है और प्रसादी की भूमि पर बैठे है। ये अपनी वारसाई है यही सच्ची पूँजी और सम्पत्ति है। विदेश में जाये रुपये कमाये कोई बात नही, गृहस्थ के लिये अच्छा है। लेकिन रस और प्रेम नोटो में नही लेकिन नोटो के पिता जो सिंहासन पर बैठे है उसमें ध्यान रखो। नींद और शांति नोट से नही मिलती है। हमें सब कुछ भगवान से प्राप्त होता है। भगवान से मिलकर दु:खी क्यो हो। आनन्द करे। मेरे मुख पर कभी ग्लानि देखे है ? हँसता ही रहता हूँ।

लिखामि सहजानंद स्वामी ..... कहते है। यह शिक्षापत्री में लिख रहा हूँ। किसी के पास से लिखवा नही रहा हूँ। शिक्षापत्री में महाराज कहते है कि ये वाणी मेरा स्वरुप है। शिक्षापत्री में मानवता का धर्म सर्व प्रथम लिखा है। खेती में रखा मजदूर या किसी अवसर पर रखा मजदूर, उसे कही हुई मजदूरी दे देते है। उसको बाकी नही नही रखते है। इसमें कौन सा शास्त्र है ? मानवता के धर्म

की बात है। कैसे दातुन करे महाराजने हमे बताया है। छत पर चढ़कर गाँव देखते हुए। जहाँ मन हो थूक दे ऐसा नही बोले है। एक जगह पर बैठकर दातुन करना चाहिए। इस में स्वच्छता और सज्जनता का पाठ दिये है। देश में आज सफाई अभियान चल रहा है। यह महाराज ने दो शताब्दी पहले बताये थे। संसार में मा-पिता अपने बच्चे का ५ से ७ वर्ष तक बालक अपने पिता का हाथ पकड कर चलता है। बाद में छोड देता है। धक्का खायेगा सीख जायेगा। हमारे बाप जीवन पर्यन्त अपना हाथ पकडे है। प्रतिदिन पाठ करना कि याद रहे की मानवता भूल न जाये। इस लिये आज्ञा दिये है। आप यदि किसी की कमी है तो वह हे मानवता की। धन और पेट्रोल की कमी नही है। काले सर वाला व्यक्ति क्या नही कर सकता ? मानव-मानव के प्रति अंतर बढ गया है। भाईयो में, परिवार में, सगे-सम्बन्धी में अड़ोश-पडोस में स्नेह नही रह गया है। झगडा-झंझट करते है। बात २% जाने देना चाहिए यदि इतना भी न कर सके तो हम मात्र मंदिर की सीढीयो को धिसने लिये जाते है। तथा कई लोग अपने लडको से बोलकर जाते है कि यहाँ की सीढीयो पर मत चढना। प्रेम से रहे ? अपना सम्प्रदाय में मानवता मूल है। मानवता खत्म होने पर कुछ काम नही आता है। मानवता बड़े से बड़ा धर्म है। देश की सुरक्षा, संस्कृति और मानवता से प्रेरित होकर प्रति दिवाली को लालजी महाराज तथा श्रीराजा अन्नकूट की प्रसादी लकेर हमारे **BSF** जवानो के बीच दिवाली मनाते है। देश के लिये शहीद **CRPF** जवानो के परिवार के लिये नारणपुरा मंदिर में उत्सव के माध्यम से २५ लाख का धन इकट्ठा किये थे। किसी को **Direct** संकल्प करना हो तो प्रत्येक सेलफोन पर **CRPF** की स्पेशल साइट पर से फंड दे सकते है। देश प्रेम तो होना चाहिए। दूसरा कुछ आये या ना आये हमें अपने देश पर गर्व करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति प्रेम माला फेरने जैसा ही है। रथयात्रा के साथ शोभायात्रा हो। उसमे कोई रोक नही है। लेकिन कार्य के दिनो में विशेषकर शहरो में शोभायात्रा नही करना चाहिए। शोभायात्रा विवाह यात्रा में बदल जाती है। शहर में ट्राफिक होती है। उसमें आवाज धुल-मिल जाती है। मानव बल तथा समय और धन, व्यय, पर्यावरण की क्षति आदि से हानि होती है। वरघोडा निकालते समय चौराहे पर आधे धंटे रोक दे तो लोग वरघोडा के लिये अच्छे शब्द का प्रयोग नही करेगे। कलेजे पर हाथ रखखर बोले अपने शोभायात्रा से सामान्य मनुष्य को कष्ट न मिले इस लिये मानवधर्म पर विचार करके वरघोडा नही निकालना चाहिए। ऐसा मेरा मानना है।

महाराजने त्याग का पक्ष लेकर उपासना के लिये मंदिर बनाये। यह वक्तव्य बहुत बड़ा है। सभा में माला कई लोग पहनते है। माला फेरना भी एक बडी तपस्या है। मैं नही कहता ४० माला फेरे, ५ फेरे अधिक है। किन प्रतिदिन भगवान के मंदिर जाकर देव का दर्शन करे। यह मेरा अनुरोधहै। आवश्यक होने पर संतोने प्रेरणा दिये है। आध्यात्मिक कर परिश्रम किये है इस लिये इन मंदिरो का उपयोग हो आवश्यक है। मंदिर जाये तो सच्चे अर्थ में मंदिर ही जाये। इस पर एक बात याद आती है वह बता दूँ। कोई शिष्य एक ऐसे गुरुकी खोज में था। कि वह गुरु दूसरे से अधिक योग्य हो। जिससे मैं आगे बढ़ सकु। मेरा अनुभव का स्तर बढे। किसी ने कहा अमुक गुरु के पास जाओ। वहाँ जाता। गुरु से बात किया कि में आप के पास रहूँगा। मुझे ज्ञान से ईस्वर की प्राप्ति करनी है। वह गुरु के पास एक महीना रहा। वह प्रतिदिन देखता गुरु कैसे शयन करते है ? कैसे भोजनक रते है ? कैसे माला फेरते है। शिष्य को सब सामान्य रुप से लगा। कुछ विशेष नही लगा। इस कारण से एक दिन आकर गुरु से बोला कि आप में और मेरे में क्या अन्तर है। आप भी खाते है, सोते है, माला फेरते है। मैं भी तो माला फेरता हूँ, सोता हूँ और खाता हूँ। मैं अब जा रहा हूँ। मेरा समय नष्ट न हो अभी गुरुने जो उत्तर दिये आप सुने। गुरु कहते है। तुमको जाना हो तो जा सकते हो, कोई बात नही है। लेकिन तुम अन्तर की बात कर रहा है तो अन्तर क्या ? मैं सोता हूँ तब सोता हूँ, जगता हूँ तो जागता हूँ, खाता हूँ तो खाता हूँ और माला करता हूँ तो माला फेरता हूँ। अब सोचो इस प्रकार करना कठिन है कि नही। बात इस लिये कर रहे है कि ईश्वर का दर्शन करते समय मात्र दर्शन ही करे। मंदिर में कौन आया और कौन गया वह देखने की आवश्यकता नही है। फिर भी यह याद रहता है। जब हम भगवान का दर्शन अन्त में कब किये पता नही होता है।

जीवन में प्रथमबार भगवान की पूजा करते है तो संत प्रेरणा देते है, प्रणालिका बताते है। स्नान करके धोती पहनाना, तिलक करना, महाराज के आसन में मोह न रह जाये। सभी क्रियाये भाव से श्रद्धा और ध्यान पूर्वक करते है। पाँच वर्ष के बाद क्या होता है ? समझ गये ? पूजा पर फोन आये। एक माला चलेगी। जाने दे कल करेगे ? ऐसे लोग भी होते है। भगवान रक्षा करे। मैं देखा हूँ इसलिये कह रहा हूँ। एक जगह मैं घर से निकला एक भगत मूर्ति उल्टी रखा था। मैं कुछ बोला नही और चल दिया। आप की व्यक्तिगत पूजा है। मैं देखने भी नही निकला था। लेकिन मन में ऐसा भाव आता है कि अरे भाई भगवान की मूर्ति तो सीधे रखे ! इस लिये महाराज कहते है कि प्रतिदिन नयी श्रद्धा रखे। यन्त्रवत आदत न डाले। सच्चे अर्थ में श्रद्धा और भक्ति में अभिवृध्धिहोनी चाहिए।

यदि हम अपना ही कार्य करेगे तो ये पशु भी करते है। किसी के लिये कुछ करे यह सत्य में सज्जन आदमी का लक्षण है। पशुओ को छोडने पर घास खाकर पेट भर वापस आ जाते है। घास का गट्ठर साथ नही लाते है। भगवान सेवकराम साधु को जानकर, रोगी जानकर सेवा किये थे। केवल बात और उपदेश नही दिये थे। गाँव में सच्चे अर्थ में कोई दुखी हो उसकी मदद करना अपना नैतिक फर्ज है। मंदिर में गली में (प्रदक्षिणा पथ पर) बैठकर आपस में हालचाल पूछे तो उन्हे भगवान नरक में नही भेजने वाले है। अहमदाबाद या मूली के मंदिर को देखे। प्रदक्षिणा में ब्रह्मानंद स्वामी सुविद्या रखे है। बन सके तो वृद्ध और बच्चो के लिये सुविधा प्रदान करना। बच्चे भगवान के सानिध्य में बडे होगे। बडे लोग धूप में बैठकर भले ही गप करे। किसी की निंदा न करे वहाँ तक चिंता नही है। जाति-लिंग भेदभाव छोडकर लोग अपना जन्म दिन, विवाह-मरण के प्रसंग के सामाजिक कार्य को भोजन व्यवस्था हो सके एसी सुविधा अपने मंदिर में होना चाहिए। ऐसे-वैसे पैसा खर्च करने से अच्छा यहाँ पर खर्च करे। नया कार्य हो रहा हो तो चार विषेशज्ञो से मत अवश्य ले। अंबापुर गाँव में अभी गोवर की जमीन पर बगीचा बनाया गया है। ये शास्त्र सम्मत कार्य है। खिस्सा पोथी की बात नही करते है। भविष्य ५० वर्ष में मंदिर में सुविधा नही रहेगी, वाथरुम गंदा तथा पानी की व्यवस्था नही हो तो मंदिर आना कठिन हो जायेगा। न आये वह चिंता नही। लेकिन प्यासे को पानी मिलना चाहिए। थके को बाकडा मिलना चाहिए। पानी दे और साथ ही साथ प्रसादी के कुछ अंश मोहन थाल या मगश दे। यह मानवता है। बाद में मंदिर में सीढी चढ कर दर्शन करे यह उसका कर्म है। यह भगवान के उपर छोड दे। गुणबुद्धि आने से सत्संग होता है। इतना समझ ले।

भगवानजी भगवान मिलने के बाद दुखी न रहे किसी समस्या का समाधान खोजे तो निराकरण मिल ही जाता है। शिकायत कर्ता कोई भी बन सकता है। लेकिन मालिक तो उका खाचर जैसे ही बन सकते है। लोग बोले उका खाचर बोले नही, लेकिन जो करना था करके चले गये। तब महाराजने उन्हें धरधणी की पदवी दिये थे।

नया मंदिर बनता हो या रिनोवेशन होता हो तब प्लीन्थ लेवर के बाद ४ या ५ सीढी से उपर मंदिर न बनाये। क्योकि दो मंजले वाले मंदिर पर बुजुर्ग चढ नही सकते है। मैने अपने आँखो से देखा है पहले खेतो में काम करके व्यायम कर लेते थे। उस समय वृद्ध लोग तुरंत सीढी चढ जाते थे। वर्तमान में मानव कुर्सी-टेबल की सेवा अधिक लेता है। आवश्यकता आने पर खुटना भी बदलवा देता है। ये समय की माँग है। दूसरे मंदिर की अपेक्षा अपने मंदिरका शिखर कम उँचा दिखे तो कोई बात नही है। लेकिन अपनी नियत और मानवता के सिद्दान्त से भगवान को खुश रखे ऐसा हो आवश्यक है। मुझे समस्या नही है लेकिन वृद्धो और छोटे बच्चे-बच्चियो का ध्यान देकर कार्य करे।

कुछ बाते खुलकर नही कहना चाहिए। परंतु इस बात को कहे बिना उद्धार नही है। कुछ भक्तो के लगाव तथा भावना का दुरुपयोग करके कुछ संत कुछ जगह पर बोलते है कि कालुपुर मंदिर से हमे सीधे दवा या अन्य खर्च देते नही है। आप भावुक होकर इस बात पर विश्वास करके व्यवहार कर देते है। ये गलत है। किसी भी मंदिर के २-४ अग्रणी जब समय मिले आप आये तथा कालुपुर मंदिर के संतो के लिये अनाज या चिकित्सालय का पेमेन्ट कितने लाखो-करोडो में किया गया है। वह हमारे पास देख सकते है। प्रत्येक वस्तु की नोंध, एकाउन्ट और सूचना आँकडा के साथ मिल सकता है। हरिभक्तो की आवश्यकता पडने पर

मदद करते है । पूरे वर्ष का प्रगति देख सकते है । कालुपुर मंदिर का व्यवस्था पारदर्शक है । ये संत आप के है । उससे अधिक ये हमारे है । संतो के भूगतान हेतु हम दो बार निरीक्षण नहीं करते है । खुटना बदले की नही उसकी जांच नही करते है । फिर भी आप आकर देख सकते है । किसी के वह काबिल आये । संतो को धोती न दे उन्हे कोई समस्या नहीं है । लेकिन अन्य व्यवस्था में रसीद विना की बात मैं मानता नही हूँ । रसीद भी देव की नरनारायणदेव की होनी चाहिए । ट्रस्ट की नही होनी चाहिए । भगवान के नाम पर आप के भावना को कोई दुरुपयोग नहीं करे इस पर ध्यान दे । अधिक धन हो तो घर में बच्चो के लिये या गृहिणी के लिये साड़ी कपड़े लाकर दे दे ।

सम्मान उसे मिलता है जो थोडा छोडना सीखता है । अधिक कठोर होने में आनंद नही है । बड़ी आँधी आने पर बड़े वट वृक्ष टूटकर गिर जाते है । क्योंकि समय के साथ चलना नही आता है । जब ऐसे आँधी में छोटे वृक्ष का कुछी नही होता है । क्योकि समयानुसार उसे बदलना आता है । इस लिये आपस में मिल जुलकर प्रेम से रहना चाहिए । भगवान और भगवान के भक्त का दर्शन करके । जीवन में यही करना है । यही हमारी पूँजी है । यह मेरा मानना है । प्राचीन समय के मंदिरो में उस समय के कारीगर कुछ कम किये पूर्ण मनोयोग से मंदिर बनाये है । लेकिन तकलीफ हमें है कि हमारे यह अच्छा नही लगता है । सोने का बनाना है । सोना में कोई स्वाद नही है । उसे सुरक्षित रखना है । व्यवस्था पूरी न होतो बताये ।

भगवान और भगवान के अवतारो में कोई भेदभाव नही करना है । भेदभाव होने पर दिवार आ जाती है । भगवान का अवतार भगवान की ईच्छा से हुआ है । हमारे और आप के इच्छा से नही होता है । जो जिसके देव है उनके लिये वह सर्वोपरि है । स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में आज्ञा दिये है कि रास्ते में भगवान का मंदिर आये तो आदरपूर्वक नमस्कार करना चाहिए । भगवानने राम को तिलक या शिवजी का तिलक हटा देने की बात नही किये है । विश्व के स्वामिनारायण सम्प्रदाय को सर्वप्रथम मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव की साथ ही साथ शिवजी पार्वती सूर्यनारायण, गणपति और हनुमानजी विराजित है। इतना ही नही कोई मुस्लिम समाज पढना चाहे तो मूर्ति विना गोखला भी मिल जायेगा । इतनी छूट, सुविधा और विचार की विशालता अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान रखे ते ।

मेरा १००% ऐसा मानना है कि सम्प्रदाय में साधु हो या सांख्ययोगी बहने हो जो देव के होकर रहते है । किसी प्राईवेट संस्था में नही है । अपने मंदिर में रहकर वर्षो से देव की, सत्संग की, हरिभक्तो की सेवा करते रहे है । ये सच्चे त्यागी और बड़े बैरागी है । ऐसे संत हमारे हृदय के टुकडे समान है । इन संतो को सेवा का प्रमाणपत्र स्वयं महाराज देगे । मैं नही देता हूँ ।

इसी न्याय से हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हमारे मंदिर को उत्सव में चाहे वह नारदीपुर हो या नाराणपुरा मंदिर रजत-जयंती महोत्सव हो या झूंडाल गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव या अन्य उत्सव संतो को अंन्तरमन से सम्मान तथा यश देते है । संक्षिप्त में सभी से क्षमा याचना के साथ सभी हरिभक्तो को भाव से वंदन तथा जय श्री स्वामिनारायण ।

श्री स्वामिनारायण मासिक के प्रतिनिधियो द्वारा आजीवन सदस्य

हमारे श्री नरनारायणदेव देश गद्दी के अच्छे निष्ठावान शूरवीर प.भ. डाह्याभाई चेलाभाई बूटिया (कालीयाणा) द्वारा जेतलपुरधाम के पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ट्रेन्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर के शताब्दी महोत्सव पर ७६ जितने श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्य बनाये है । प.पू. लालजी महाराजश्री उन्हे अन्तःकरण से आशीर्वाद प्रदान किये है ।

प.भ. उपेन्द्रभाई बलदेवभाई सोनी विरमगाम चि. पौत्र मंथन के जन्मदिन पर १५ श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्य बनाये है । प्रत्येक सदस्य से रु।. १००/- सौजन्य सेवा किये है । उन्हे भी प.पू. लालजी महाराजश्री ने अंन्तःकरण से आशीर्वाद प्रदान किये है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

एक उत्साही संत की चोटी खड़ी हुई । आँखो में गुस्सा भर गया होठ काँपने लगा, शरीर कांपने लगा, मन में रोष से युक्त ऊंचे स्वर से पट्न को श्राप देने के लिये देवानंद स्वामी तैयार हो गये और साथ में कमन्डल में से पानी को अंजलि में लेकर.... सहजानंद महाप्रभुने उन्हे तुरंत शांत किये और धैर्य रखने की आज्ञा दिये - सभी समाज के भ्रमित होकर एक संत की आध्यात्मिक शक्ति और उनके गुरु श्री स्वामिनारायण भगवान की करुणा द्रष्टि को विस्फरित नेत्र से देख रहे थे ।

बात ऐसी है कि उस समय अहमदाबाद में पेश्वा का शासन था । छलकपट से स्वामिनारायण को मारने के लिये भद्र के बट्टी तेल की टंकी के उपर आसन लगाकर सहजानंद स्वामी से वहाँ पर आने को कहा गया ।

श्रीहरि अपने साथ कुछ पार्षद और साधु के साथ वहाँ आये । लेकिन अन्तर्यामी श्रीहरि पेशवा के मलिन भाव को जान गये थे । इस कारण से अपने आसन को सहजभाव से अपने छड़ी से थोडा दबा कर देखे आसन टंकी के अन्दर गिर गया । और पेशवाकी करतूत का पर्दापाश हो गया ।

श्रीजी महाराज के इस छडी ने ऐसे अनेक लोको के कृत्यो को पर्दापाश किये है । इसी छडी से कई भक्त जनो को समाधिभी प्रदान किये है ।

यह एक ऐसी महाप्रसादी छडी है जिसने पेशवा का षडयंत्र का पता लगाया । उनका राज्य भी चला गया । यह चमत्कारी छडी आज अपने म्युजियममें सुरक्षित है । राज सत्ता से भी दूर कर दे । ऐसी ये धर्म की छडी का दर्शन करके हम लोग पुण्य प्राप्त करते है ।

सभी हरिभक्तो ये प्रसंग पढ़कर विचार कर खूब महिमा पूर्वक इस छडी का दर्शन करियेगा ।

स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ४ यह प्रसादी की छडी रखी गयी है ।

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची मार्च-२०१९

दि. ०९-०३-२०१९ अमृतभाई शिवाभाई पटेल परिवार (कौशलेन्द्र ईन्जीनीयरिंगवाला - अहमदाबाद)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-मार्च-२०१९

दि. ०५-०३-२०१९ पटेल सुधीरभाई परसोत्तमभाई (दासभाई), ह. लाभुबेन तथा नेहा तथा वेनेसा (हर्षदकोलोनी - बापूनगर हाल ओस्ट्रेलिया)

दि. ०९-०३-२०१९ स्वामिनारायण म्युजियम के आँठवे वार्षिक उत्सव पर महापूजा के मुख्य यजमान प.भ. श्री करशनभाई कानजीभाई राघवाणी, अ.सौ. जशोदाबेन करशनभाई राघवाणी, श्री श्यामभाई करशनभाई राघवाणी, अ.सौ. दिमिताबेन श्यामभाई राघवाणी, श्री ऋषिकुमार करशनभाई राघवाणी, अ.सौ. रेश्माबेन ऋषिकुमार राघवाणी, कुमारी रीमाबेन करशनभाई राघवाणी, कुमारी हर्षिनीबेन श्यामभाई राघवाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि मार्च-२०१९

रु। २१,०००/- रमीलाबेन गोविंदभाई पटेल - मणीनगर

रु। ५,१२१/- अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीचंद भालजा साहब, ह. प्रबोधभाई झाला, डॉ. निकुंज - स्वामिनारायण म्युजियम के आठवें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में।

रु। ५,०११/- डॉ. निकुंज के पुत्र अर्थ के आठवे वर्ष के प्रवेश के उपलक्ष्य में, ह. डॉ. निकुंज, डॉ. धारा

रु। ५,०००/- अ.नि. आनंदीबेन वासुदेवभाई काछिया - बालासिनोर

रु। ५,०००/- मीनाबेन के. जोषी - बोपल

रु। ५,०००/- लालजीभाई रवजीभाई सूतरीया चि. परिमल के विवाह अवसर पर - कर्मशक्ति - नरोडा

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग आख्यानिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

श्रीहरि द्वारा स्वयं कही एक कथा

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

बाल मित्रो ! आज हम एक अच्छी बात पढेगे । और हाँ ये बात भी कैसी ! स्वामिनारायण भगवानने स्वयं की कही और हाँ वो भी अहमदाबाद में । और हाँ वो भी नरनारायणदेव की सन्मुख बैठकर ! बात ऐसी है ।

परमात्मा स्वामिनारायण भगवान विक्रम संवत १८८२ के फाल्गुन माह के त्रीज के दिन अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की सन्मुख वेदिका के उपर बिराजमान थे । भगवानने गुलाबी रंग की पगड़ी पहनी थी । पगड़ी में गुलाब के फूल के डाल झूल रहे थे । गुलाब के बहुत सारे हार धारण किए हुए थे । अनेक प्रांतो से गाँव-गाँव से उए हुए संतो-हरिभक्तों की सभा हुई थी । फिर भगवान स्वंय कहने लगे हे भक्तो ! एक बार कोई एक नटमंडली निकली किसी गाँव के राजाने जाकर बात कही में हमारी विद्या बतानी है । राजाने हाँ कहा । रात को प्रोग्राम नक्की हुआ । उस नट ने राजा से कहा की राजा साहेब ! आप आओं तो ही पहले के राजाओं को कहीं भी रात या दिन में जाना होता तो डर नही लगता था । अब तो इधर-उधर हाजरी देते है । कहीं जल्दी आते है नहीं । राजाने हाँ कहाँ बोला ।

इस नट मंडल में नट और उसका परिवार और दूसरे यंत्र बजाने वाले इतने लोग थे । दूसरे कोई नहीं । गाँव के चौक में रात को सभी लोग इकट्ठे हुए । राजा को जाकर नमस्कार किया और प्रोग्राम शुरु किया ।

नट एक सूत का गेंद लाया । फिर कहा के देखो सब सुनो । अभी आकाश में देवों और दैत्यो का युद्ध चल रहा है और उसमें देवताओं की मदद में मुझे लडने जाना है अभी तुम्हारे देखते ही स्वर्ग में चला जाऊँगा ।

ऐसा कहने के बाद राजा के पास गया और विनंती की की में लडने जा रहा हूँ देवो के पक्ष में लड़ते-लड़ते शायद मेरी मृत्यु हो तो मेरी पत्नी और बच्चों का भरण पोषण करने की व्यवस्था आपको करनी होगी ।

ऐसा कह कर उसने सूत का गेंद आकाश में फेंका गेंद आकाश में गई और एक छोर नट के हाथ में रहा । इस छोडे से नट उपर चढ़ने लगा सभी लोग उसे एक टक देख रहे थे की इतने पतले सूत के डोरी पर ये नट किस तरह चढ़ सकता है । नट उपर गया फिर शस्त्रों की आवाज आने लगी । मारो-मारो की आवाजे सुनाई देने लगी सबको लगा की सच में युध्धचल रहा है ।

कई बार फिर एक वस्तु बनके नट का एक हाथ हथियार से कटकर नीचे गिर पडा । थोडी देर बाद फिर से दूसरा गिरा । ऐसे करते करते पैर, सर, धड सब नीचे गिरा और सचमुच नट की मृत्यु हो गई । ये देखने वालो को लगा नट का शरीर टुकड़ो में देख सभा में सन्नाटा छा गया ।

उसके बाद नट की पत्नी खड़ी हुई राजा से कहने लगी की अब मेरे पति की मृत्यु हुई है । इस लिये अब मैं भी नही जीना चाहती मैं भी अपने पति की मृत शरीर के साथ सती हो जाऊँगी । तभी राजा बोले की तुम ऐसा मत करो मैं तुम्हें भरण-पोषण की सभी व्यवस्था करा देता हूँ मकान भी दे देता हूँ तुम सुखी से रहना । पर नट की पत्नी मानी नही उसने हठ पकड़ रखी थी । खुद के पति के शरीर के टुकडो को इकट्ठा किया लकड़ी मंगवाई और उस पर नट की पत्नी बैठ गई । देखते ही देखते आग में नट की पत्नी जल गई । सब लोग हाहाकर करने लगे दु:ख व्यक्त करने लगे और जहाँ खड़े रहने की तैयारी की है वहाँ तो सूत का गेंद आकाश में फेंका हुआ दिखाई दिया और कोई व्यक्ति उपर से नीचे आ रहा है ऐसा लगा । व्यक्ति बहुत नीचे आया तब सबको ध्यान आया की ये

तो नट है और ये जो मर गया ये कौन ? उसकी पत्नी भी सती हो गई अब क्या होगा ? नट तो जमीन पर आ गया। राजा के पास गया और पूछा की राजा साहेब ! मेरी पत्नी कहाँ है ? तब राजाने कहा वो तो तुम्हारी मृत्यु के बाद सती हो गई। नट ने कहा राजाजी ! झूठ न बोलो मेरी पत्नी को आप ने छुपा कर रखा है ? राजाने कहा मैने कहीं नही छुपाया ऐसी बातचीत चल रही थी तभी नट ने अपनी पत्नीको आवाज लगाई आवाज लगाने के साथ ही राजा जिस पाट के उपर बैठे थे उस पाट के नीचे से बाहर आया। कोई समझा ही नही ये सब कैसे हुआ। सबने ताली बजाई और नट को पुरस्कार भी दी और अपने-अपने घर चले गये।

दोस्तो ! कहानी पसंद आई या नहीं तो इस कहानी को कहकर स्वामिनारायण भगवान ऐसे समझाते है की जैसे नट लोको को खेल नट विद्या को जो जानते है तो इसे देख कर आश्चर्य नही होगा परंतु जो नहीं जानते है उन्हें आश्चर्य होगा।

ऐसे तो भगवान के स्वरुप की सच्ची निष्ठा हो तो भगवान कोई भी चरित्र पठे या सुने तो उसमें कभी भी शंका नही होगी और निश्चित कभी नही डगमगायेगा नही। इस लिए भगवान के स्वरुप में दृढ निश्चय करके अनेकों अनेक दिव्य चरित्र को करने वाले ईष्टदेव की एक निष्ठा से सदा भजन करना।

●

गुरु बिना ज्ञान नही

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

अध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्र में जो सफलता प्राप्त करती हो तो उसके लिए कोई आवश्यक परिबल हो तो वो गुरु है। कोई भी शास्त्र में गुरु का स्थान खूब ही ऊंचा लिखा हुआ है। कोई भी व्यक्ति वो छोटा हो या बड़ा राजा को या प्रजा फिर भी गुरु की अनिवार्यता सब के लिए होती है गुरु के तरीके जिसने जीवन में स्थान दिया हो उसकी क्या योग्यता जरुरी है उसकी समझ अपने आज बात बहुत ही अच्छे से समझ आएगी।

बात है अमारापुरी नगर की बहुत सुंदर और सुआयोजित तरीके से तैयार करने आए हुए नगर में राजा खुशवंतसिंह शासन करते थे। उनकी अदालत में अच्छेअच्छे दरबारी थे। जिनकी कुशल कामगीरी से राज्य का संचालन अच्छा चल रहा था। उनमें से कितने दरबारीओ का राजा के साथ अच्छा मित्रस्वभाव था। तभी कईबार राजा को कोई विद्वान महात्मा के कोई पंडित पर योग्य लगे ऐसा गुरु पद के स्थान देने की इच्छा करते। राजा के गुरु तो राज्य के गुरु कहलायेगे। पहले तो राजा के राज्यों में राजगुरुओ का स्थान खूब ही ऊँचा माना जाता था।

महाराजा कईबार दरबारीओं से कहते भी फिर भी आप की बात सही है की हमें गुरु की जरुरत है पर राजगुरु पद पर शोभे और ज्ञानी महान व्यक्ति मिलना तो चाहिए न। तब दरबारी कहते अरे ! अपने देश में ज्ञानीओं की कोई कमी नहीं है। एक कहते ही जाओ मिल जाएगे पर बस राजा के मन में गुरु की योग्यता के लिए कोई अलग ही विचार था।

उनकी बुद्धि के अनुसार गुरु ऐसा व्यक्ति की उसके सामने कोई भी व्यक्ति वाद-विवाद में टिक न सके उसके उपदेश से कोई बदल ना सके उसकी बात में कोई शंका न हो उसमें किसी को भी कोई कमी ना दिखाई दे ऐसे लक्षणो वाले गुरु राजा चाहते थे।

दरबारीओं नेकहा इसमें क्या ..... अपके बुद्धि के अनुसार भी बहुत से मिल जाऐगे। राजा ने तो कह दिया जो अगर ऐसा व्यक्ति है तो खोज निकालो उसमें राजगुरु का दर्जा दूगा। सारे नगर में ये बात आग की तरह फैल गई एक निश्चित तप किए गए दिन गुरुओं के महा बड़े संमेलन का आयोजन हुआ राजा के गुरु होना किसे नही पसंद होगा ! ज्ञानी पंडित, महात्मा, फकीर सब कोई इस सभा में हाजिर थे। प्रथम तो राजाने सबका सत्कार किया फिर राजाने सब के आगे गुरु की योग्यतां के लिए अपनी बुद्धि व्यक्त की। ये सुनकर आए हुए सभी विचार करने लगे की ऐसा तो कोई नहीं है। एक के बाद एक बिखरते गए।

(पेईज नं. २१)

भक्तिसुधा

BHAKTI-SUDHA

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "अपने जीवन को सच्चे ज्ञान से सशक्त करना है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

इस भवसागर को पार करने का खूब सरल है मन द्वारा ईन्द्रियो को वश में करना और बुद्धि द्वारा मनको नियंत्रित करना बस इतना ही करना है कितना सरल है ?

मन क्या करता है ? तो मन भाव बनाने वाला कार्य करता है । राग-द्वैष, घृणा, तिरस्कार, आशक्ति, संकल्प-विकल्प ये सब बनाते है और ही बनता है उसको उपर से ही बुद्धि निश्चित करते है ही इसमें से क्या करना है क्या अच्छा है ? क्या खराब है ? क्या त्यागने जैसा है ष क्या ग्रहण करने जैसा है ? कौन सी वस्तु हमें सुख देती है ? ये सब 'निर्णय' करना कार्य बुद्धि का है जैसे जीव और माया का युद्ध चले उसी तरह अपने अंदर उसी तरह बुद्धि और मनका युद्ध हर रोज चलता है । अपने अंदर हररोज सुबह अपने जागे तब ऐसा होता है की अपने अभी पद्रंह मिनिट सो जाए । ठंडी में ज्यादातर ऐसा होता है । तो भी हमें खडे होना पडता है इतना ही काम बाकी है तो पहले जगना पड़ता है । तो मन के उपर बुद्धि की 'विजय' हो तो जो अपने अंदर युद्ध चलता है और अंदर बुद्धि विजय प्राप्त करती है षानी की बुद्धि द्वारा मन का 'नियंत्रण' हो गया है । अपने उपर जो मन का ही चले तो १० बजे तक सोए रहेंगे अपना मन ईन्द्रियो की आज्ञा करती है । और ईन्द्रियाँ भी उसी तरह कार्य करती है । पर बुद्धि ही इस तरह कार्य करने को रोक सकती है । अपने किसी के घर खाने के लिए गए हो कोई भी प्रसंग में अलग-अलग पकवान देखकर खाने की ईच्छा जागृत हो जाय । तब हाथ लंबा किया और थाली परोसली जाय तुरंत ही विचार आता है ये सब नही खाना है पूरी रात परेशान होना पडेगा तो अपने परोसी हुई थाली भी फिर से रख देते है खाने की तैयारी ही थी । पर बुद्धि ने 'निर्णय' किया की ये वस्तु मेरे लिए अच्छी नही है । उसी ही तरह विचार करो की कोई व्यक्ति ने निश्चित कर लिया की कोई भी परिस्थिति हो पर जीवन की सरलता धन पर निर्भर है तो वो व्यक्ति की बुद्धि में नक्की हो गया है की धन में ही सुख है तो वह व्यक्ति रुपयों के पीछे दौडेगा उसका जीवन वैसा ही हो जाएगा अर्थात् बुद्धि द्वारा विचार करके 'निर्णय' ले तो उस पर ही हमारा जीवन 'निर्भर' है । भगवानने जो अपने को बुद्धि द्वारा विचारने की शक्ति दि है उसके द्वारा मन के उपर नियंत्रण हो सकता है । परंतु अपने नियंत्रण नही कर सके और पराजित हो जाते है तो क्यों हो जाते है ? जो सच्चा ज्ञान है जिसके अभाव में पराजित हो जाते है विचार करो की कोई जवान लडकर कोलेज में पढ़ता है उसे किसी ने कहा की व्यसन में मजा आती है तो एक समय होता है और बुद्धि 'निर्णय' हो गया की ये करने में सुख है तो वो इस रास्ते पर चल पडता है । संग का रंग लगा है तो उसके विपरीत बुद्धि कही जायेगी । जो अपने संसार में धुमाता है । विपरीत बुद्धि को अंदर सच्चे ज्ञान का अभाव होता है । सच्चे ज्ञान का 'अभाव' यानी अपने को जो वस्तु पसंद हो तो प्राप्त कर ले फिर जो होना होगा वे होकर रहेगा ऐसी मान्यता है । ऐसे सच्चे ज्ञान का 'अभाव' कहलाता है । दुनिया में अपने को किसी ने किसी भी विषय में अचछा कहा तो अपने को अच्छा (सुख) लगता है । और किसी ने किसी विषय के बारे में खराब कहा तो अपने को खराब (दुःख) लगता है । तो अपने दुनिया के कहने पर सुखी दुःखी होते है पर दुनिया करने वाली नही है । ऊपर बैठे है

वो परखते है की हम क्या सही कर रहे है दुनिया की बात में आने का नही । कहने का अर्थ है की सही क्या है ? ये जानने की जरुरत है । सत्संग के मंडल या भीड में रहने से सही 'समझ' मिलती है । बुद्धि 'सच्चका' होती है । तो अपनी बुद्धि को 'सम्पन्न' बनाना है । 'सम्मक' बुद्धि यानी क्या ? तो सवरी बुद्धि जो बुद्धि अपने को अपने मोक्ष प्राप्ति का 'ध्येय' रत हो ऐसी बुद्धि । जो बुद्धि अपने 'लोभ', 'लालच', 'कपट' ये सब सिखाती है ये विपरीत बुद्धि है सच्चा ज्ञान अपने को सत्संग से प्राप्त होता है । शास्त्रो में के माध्यम से भी मिलता है । शास्त्र अपने को श्रेष्ठ का उपदेस देते है जब दुनिया अपने को श्रेष्ठ का उपदेश देती है । जो सच्चा ज्ञान हो तो छोटे बालक परभी मन पर नियंत्रण कर सकता है विचार करों की अपने छोटे हो तो स्कूल जाने पर कईबार मन नही होता । परंतु जब परीक्षा हो तो तब मन में कोई भी प्रकार का विचार नही आता । 'चित्त' कहीं भी भटकता नहीं जो पेपर सामने हो तो उसके सिवाय कुछ भी नही दिखता जितनी शक्ति हो वो एकत्रित करके एक चित करके वे तीन घंटे तक परीक्षा देते है थोडी देर के लिए भी 'चित' बाहर जाता नहीं क्यों की अपनी बुद्धि में 'निश्चित' हुई हो गया है कि वे परीक्षा मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है मुझे पास होना ही है । जो मैं पास नही हुई तो मेरा पूरा वर्ष बिगडेगा । इस तरह का डर हमारे मन के अंदर रहेगा की ये मेरी जीवन परीक्षा है । उसमें मुझे पास होना ही है । जो नहि हुआ तो चौर्यासी लाख योनियो में भटकना पडेगा और पिर मुझे इस दुनिया में आना पडेगा । ऐसा डर रहेगा तो मन अपने आप नियंत्रण हो जायेगा ।

ज्ञान भी दो प्रकार के है, 'सत्य' और 'असत्य' बहुत से लोगों को भगवान संबंधी विचार आते है . तो भगवान के विरुद्ध में भी विचार आते है लोग निराकार वादी हो जाते है भगवान का क्या माहात्म्य है ये भी समझना खराब है तो वह उसी तरफ ही चलते है पर सच यही है की भगवान 'साकार' है । तो सच्चा ज्ञान खुद की विवेक बुद्धि से सशक्त करने को शास्त्र के 'वचन' नुसार रहना भगवान की आज्ञा में रहना ।

जीवन में सत्संग के माध्यम से और खुद की विवेक बुद्धि से सच्चा ज्ञान प्राप्त किया होगा तो कोई भी गलत काम अपने जानकारी में नही होगा परंतु हमारी जानकारी को बिना हो जाए तो भी उसका कर्म हलवे की तरह बनता है छोटे में कहें तो अच्छे विचार करने वाले तो बहुत अच्छे होंगे ।

•

मानभाई की देन

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, पद, मद ये षटरिपु मुमुक्षु जीवात्मा के बड़े अंत:शत्रुओ है और अंत: शत्रुओं से जीतना बहुत ही कठिन है जिसने अंत:शत्रुओं को जीता वह सभी जगत जीत लेता है । ईश्वर की कृपा होगी तो ही अंत:शत्रुओं की जीत होती है । अंत:शत्रुओं की आत्मा के कट्टर की दुश्मन है षटरिपुओं को एक से एक तकतवर है सभी से अंत:शत्रु सबसे बलवान है दुनिया में कहावत है की ''छछुंदर के छ: एक बराबर'' किस को अच्छा कहा जाए तभी सभी ही अंत:शत्रुओं का साधक के लिए बहुत ही खतरनाक है ।

भगवान के जैसे जैसे अवतार होते गए वैसे ही उनहे बाह्य शत्रुओं को नाश करेगी और खुद के भक्तों की रक्षा की है वे असुर भजन-भक्ति में विद्वानो की खड़ा करते और रहने की व्यवस्था की कंस, कालयवन, जरासंघ, और रावण जैसे दुष्टो का संहार किया । इस तरह बाह्य शत्रुओं के संहार करके यज्ञों निर्विध्ने होने लगा अब भजन में सुख आते ऐसा भक्तों का मानने लगे इस तरह कोई भी बलवान बाह्य शत्रु को भौतिक शास्त्रों में सब इकट्ठा किया जा सकता है पर अंत:शत्रुओं के लिए हाईड्रोजन बोम्ब भी नाकाम बन गए । उनके संहार करने के लिए तो ज्ञान-वैराग्यरुपी द्विय शास्त्रो भोक्तरुपी समय और उपासना रुपी ढाल उसी तरह अंत:शत्रुओं के मरने का जीवन भगवान की शरण जरुरी है शरण स्वीकार्य बिना अंत:शत्रुओं का संहार होता नहीं ।

श्री स्वामिनारायण भगवान ''वचनामृत'' में कहते है की मेरे आश्रित को अंत:शत्रुओं के साथ अवश्य वेर रखा है पूर्वे ही अवतारों तथा उनमें बाह्य शत्रुओं का संहार किया है परंतु खुदके भक्तों का अंत:शास्त्रों से घोडवा कर ही स्वामिनारायण भगवान का अवतार होता तो उसी से स्वामिनारायण भगवान का अवतार होता तो उसी से स्वामिनारायण भगवानने खुद के आश्रित अंत:शत्रुओं को सामने लडते-लडते जो चिर निंद्रा में सो जाए और अंत:शत्रुओं का जीतना बाळी रह जाएगा तो भी हम उससे अंत:शत्रु भी उपर खुश हो जाएगें और जो अंत:शत्रुओं के सामने विजय मिलने से तो परमहंस हो जाएगे और सदेह से मुक्त होगी। इस लिए अंत:शत्रुओं के जीतना हिंमत रखनी चाहीए जो कायर है उसे उपर भगवान कभी भी तैयार नही होते।

अंत:शत्रुओं सब से ज्यादा बलवान है पर तात्विक द्रष्टि से देखने पे सब में मान-सम्मान सबसे शक्ति शाली है घमंड सब का सरदार है श्री कृष्ण भगवानने ''गीता'' में सभी पापका मूल काम ने कहा है तुरंत श्री महाराजाने वचनामृत में कहा है ''काम'' करते ही घमंड बहुत बलशाली है ''काम'' का भी गुरु ही ऐसा है कामी हो तो जैसे-जैसे करके सत्संग में बैठ जाएगा।

परंतु जो धमंडी होगा उसके घमंड पर मंडराता पहले-बाद में जरुर विमुख होगा श्वान सुखी हड्डी को अकेले में ले जाए और खाए तब उसका मुँह छिल जायगा और खून निकलेगा अगल श्वान चखकर ये समझे की मैं हड्डी में से रक्त पान करता हूँ तो मन में से लेने वाले स्वाद वाले लोगों को नही समझने की उनका कितना नुकसान हो रहा है। सत्संग में से जो विमुख होता है वह बड़े भाग में घंमड और पूजा करने से भावनाओं के लेकर होता है। इस लिए सावधानी रखनी चाहिए। घमंड के कारण जो विमुख हुआ है उसके हृदय में घमंड सह परिवार निवास करते है ऐसे सत्संग के द्वैषी विमुखों के मुख से कथा कहानी भी कभी नही सुननी चाहिए।

भगवान के भक्तों में आत्म निष्ठ, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति वगैरह होने के बावजूद भी जो घमंड हो तो दिव्य सत्संग में भी सुख शांति लेने नही देता। घमंड का नशा चढ़ते ही सत्संग का नशा तुरंत उत्तर जाएगा और भक्त को भगवान से डर कर देगा घमंड बेहरुपी जैसा है कभी भी किसी रुप में आएगा। ये कहना बहुत ही कठिन है कोई भी संपत्ति से कोई भी पद से कोई भी विद्या से घमंड आएगा और किसी को अपनी शक्ति पर घमंड होता है।

जैसे की श्रीकृष्ण भगवान के सुदर्शन चक्र को एक बार घमंड हुआ की मुझ में दस हजार सूर्य से भी ज्यादा तेज है और इन्द्र देव का व्रज और शंकर भगवान के त्रिशूल को भी मैं नाश कर सकता हूँ। और भगवान के वाहक गरुण को भी अभिमान आ गया की तैंतीस करोड देवो के चौसठ करोड असुर भी न उठा पाए ऐसे बड़े मंद्राचल पर्वत को मैं चोच में उठाकर समुद्र में रखा और भगवान को भी मैं पीठ के ऊपर बैठाकर घूमा सकता हूँ इसलिए मेरे जैसा कोई नही।

इस सुदर्शन और गीधको अभिमान को उतारने का काम भगवानने हनुमानजी को सौंपा इसलिए हनुमान जी द्वारका में आए और प्रभु के दर्शन के बाद वे बगीचे में जाकर जल-फल खाने लगे।

इसलिए गीधवीने भगवान से कहा ''बगीचे में एक बंदर तूफान कर रहा है उसे यहाँ पकड कर ले आओ और तुम से न पकडा जाए तो सैनिको को ले जाओ।'' ये सुनकर गीधको गर्व आया की भगवान मेरा मजाक करके सैनिको को ले जाने को कह रहे है। बाकी मेरे लिए एक बंदर यानी क्या ? ऐसा विचार करके वो बगीचे में आया हनुमानजी ने देखा गीधविचार कर रहा है ''बंदर को पकड लूँ'' वहाँ तो हनुमानजी ने छलांग मारी और गीधको पूँछ में बाँधकर खीचने लगे फिर गीधका पैर पकडकर ये फेंका की समुद्र में जाकर गिरा फिर जैसे तैसे बाहर निकला।

फिर हनुमानजी से कहा ''आपको प्रभु बुला रहे है इस लिए मेरी पीठ पर बैठकर प्रभु के पास चलो, फिर हनुमानजी ने कहा की ''तुम चलो मैं आता हूँ'' गीधतो

फुरररररर.... करके उड गया । जहाँ श्रीकृष्ण भगवान के पास पहुँचकर देखा तो हनुमानजी तो पहले से ही खडे थे । उसे उडने का घमंड उतर गया ।

हनुमानजी द्वारका में प्रवेश कर ही रहे थे की तभी सुदर्शन चक्र ने उन्हे रोका वहाँ से हनुमानजी ने उसको मुख में रख दिया । यहाँ दूसरी तरफ हनुमानजी को भगवान ने पूछा की ''तुम्हें द्वारका में आते समय किसी ने तुम्हे रोका नही ? तब हनुमानजीने तुरंत मुख से सुदर्शन चक्र को निकाल बताया और कहा ''ये चक्र रोकने आया था ।''

इस तरह सभा के बीच में सुदर्शन चक्र को मुख से निकाल कर बताया तो उसका अभिमान उतर गया ऐसे बड़े बड़े को घमंड आया तो उसका अंत भी हुआ इस लिए किसी तरह का घमंड नही रखना चाहिए । सब के साथ अच्छे व्यवहार के साथ रहना चाहिए । भगवान की प्रसन्नता जैसी, निर्मलता भक्तों के उपर होती है उसी तरह भक्तों के उपर कभी भी घमंड नही होता ''इसलिए अगर भगवान को खुश करना हो तो भक्तजनो को सभी भी घमंड रुपी महाशत्रु को अवश्य त्याग कर देना चाहिए ।''

(अनु. पेईज नं. १७ से आगे)

इस बात को कई दिन हो चुके थे . एक दिन कोई महात्मा घुमते-घुमते इस नगरी में आ पहुँचे । उन्हे पता चला की राजा का गुरु विशेष मत और संमेलन की बात पता चली । किसी पक्के इरादे से महात्मा दूसरे दिन सुबह राजदरबार में पहुँचे और गुरु होने की खुद की उमेदवारी लिखादी और राजा के पास आकर शर्त रखी के आपके साथ मुलाकात अकेले में होनी चाहिए । राजाने तैयारी दर्शाई महात्माने तो राजाने दूसरे दिन सुबह नदी किनारे मुलाकात के लिए बुलाया ।

महात्माजी ने कहा अपने नदी के पार जाते है वहाँ में आपको उपदेश दूँगा । सामने जाने के लिए नाव मँगाओ । राजाने तुरंत हुकम किया नाव हाजिर । नाव देखकर महात्मा का मुँह बिगड गया । ये नाव तो बहुत गंदी हो गई है इसमें निशान पड़ चुके है ये नही चलेगी अच्छी नाव मँगाओं दूसरी मंगाई । उसमें भी खामी बताई तीन, चार, पाँच..... ऐसा करके शाम हो गई फिर भी एक भी नाव महात्मा को अच्छी नही लगी । राजा को गुस्सा तो बहुत था । पर चुपचाप रहे तभी राजाने थक कर कहा की महात्मा ! ऐसी कौन सी नाव है की जिसमें कोई दोष न हो ! आपने कहाँ वो खरीदी है ? सामने पार ही तो जाना है तो फिर भी कोई क्यों नही किसी में भी जा सकते है इसमें इतने दोष निकालने की क्या जरुरत है ।

महात्माने सोचा की ये सही समय है राजा को सीख देने का वो तो जोर-जोर से हँसने लगे राजा को आश्चर्य हुआ की ये कैसे महात्मा है । पूरा दिन नाव मँगाने में ही लगा दिया और अब मैं प्रश्न पूछ रहा हूँ तो हँस रहे हैं । महात्मा ! आप क्या कर रहे हो मुझे कुछ पता नही चल रहा है । महात्माने कहा हे राजन् ! मुझे आपको यही बात समझानी थी की मनुष्य द्वारा जो कोई भी दोषो को एक दूसरे घर देखा है तो सचमुच ये देखने की कोई जरुरत ही नही । आप को भवपार उतारने में ये ज्ञान उपयोगी है या नहीं बस इतना ही विचार जरुरी है ।

महात्माका ये बहुत उपयोगी मर्म उपदेस राजा के हृदय में उत्तर गया । उन्होंने खुद का सिर महात्मा के चरणों में रख दिया बस आज से आप मेरे गुरु आपने मेरी भूल सुधार दिये । जीवन जीने की जडी बुट्टी आपने मुझे दिया मैं धन्य हो गया ।

दोस्तो ! देखा न ..... इस महात्माजी की युक्ति द्वारा दिया हुआ ज्ञान राजा का जीवन का सार्थक बना दिया । इसलिए जीवन में गुरु की जरुरत और महत्व बहुत है ये बात सबके लि जरुरी है इसलिए ही अपने ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान स्वयं भी रामानंद स्वामी को खुद के गुरु स्थान पर स्थापित कर दिया और धर्मकुल ने अपना गुरु स्तान स्थापित करने की परंपरा चालू रखी है ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९७ वाँ पाटोत्सव महोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवानने सम्प्रदाय में सर्वप्रथम श्री नरनारायणदेव को सन १८७८ में फाल्गुन सुद-३ को श्रीनगर अहमदाबाद में स्थापित किये । तथा सम्प्रदाय के लिए मोक्ष और कल्याण का द्वार खोल दिये ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभाज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी में अ.नि. स.गु. चितारा स्वामी बलदेवप्रसाददासजी के दिव्य आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर मंदिर) के सुंदर मार्गदर्शन से उनके शिष्य स.गु. भंडारी स्वामी जयप्रकाशदासजी (जे.पी. स्वामी) की शुभ प्रेरणा से परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९७ वाँ पाटोत्सव अ.नि. प.भ. पूंजाभाई सोमाभाई पटेल (उमरेठवाले - अहमदाबाद-वर्तमान शिकागो) अ.नि. रेवाबेन पूंजाभाई पटेल ह. प.भ. महेन्द्रभाई पूंजाभाई पटेल, अ.सौ. सुधाबेन महेन्द्रभाई पटेल और कौशल महेन्द्रभाई, अ.सौ. भाविना कौशल पटेल आदि परिवार यजमान पद पर बिराजे थे । यजमान परिवार फाल्गुन सुद-२ को श्री हरियाग होमात्मक पूजा और फाल्गुन-३ को श्रीनरनारायणदेव आदि देवो की पूजा शास्त्रोक्त विधिसे करके अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुए ।

सं. २०७५ फाल्गुन सुद-३ ता. ९-३-१९ शनिवार को प्रांत: ६-३० से ७-०० के बीच प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की षोडशोपचार महाभिषेक वेदविधिसे उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

प्रसंगोचित सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री का यजमान परिवार पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये ।

तत्पश्चात पू. महंत स्वामी आदि संत मंडल श्री नरनारायणदेव टेम्पल बोर्ड के सदस्य श्री अग्रणी हरिभक्त और यजमान परिवार सभीने धर्मकुल की आरती करके दिव्य लाभ लिये ।

पू. संतो की प्रेरकवाणी में पू. महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, पू. स.गु. शा. स्वा. निर्गुणदासजी आदि संतोने परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की महिमा का सुंदर वर्णन किये थे । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.ध.धु आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये और बोले आगामी श्री नरनारायणदेव की द्विशताब्दी महोत्सव में अहमदाबाद, मूली और भुज के गाँवो में घुमने की व्यवस्था की जायेगी । इसमें लालजी महाराजश्री भी जिस गाँव में हम लोग जायेगे वहाँ पर आपश्री भी आयेगे । यह दिशताब्दी महोत्सव भव्य रुप से मनाया जायेगा । ऐसा कहकर आशीर्वाद दिये है । पूरे प्रसंग का संचालन स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजीने अच्छे सम्भाला था । अंत में ठाकुरजीकी अननकूट आरती धर्मकुल के हाथो से पूर्ण हुई । अहमदाबाद शहर के बाहरी विस्तार और गाँवो से हजारो हरिभक्त पाटोत्सव का दर्शन करके धन्य हुए। पू. अवसर पर पू. हरिचरण स्वामी (कलोल) भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, नटु स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत हरिभक्तोने अव्यधिक सुंदर सेवा दी । (कोठारी शा. नारायणमुनिदासजी)

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में फूलदोत्सव मनाया गया

परमब्रह्म परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से अ.नि. प.भ. भरतभाई नरसीभाई पटेल गं.स्व. गौरीबेन अमरतभाई पटेल ह. सुपुत्र श्री जतीन पटेल और श्री रितेष पटेल (पौत्र-साजन-किरात) परिवार के यजमान पद से फाल्गुन सुद-१५ ता. २०-३-१९ बुधवार के दिन श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया था ।

सर्व प्रथम प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री नरनारायणदेव की आरती करके गुलाल उड़ाकर सभा में सुदंर बनाये गये सामियाना में केशुडा के सुंदर रंग को पिचकारी द्वारा प्रसादी के चौक में हजारो भाविक भक्तोने उत्सव मनाया गया । आज के तकनीकी से रंग के पत्ते से पूरे मंदिर शोभायमान था । यजमान परिवार के दोनो भाईयोने भाग लेकर अपने जीवन को धर्मकुल और देव के लिये समर्पित करके धन्य हुए । पू. महंत स्वामी के शिष्य मंडल सुंदर व्यवस्था किये थे । मंदिर में कही पैर रखने की जगह नहीं थी । हमारे श्री नरनारायणदेव देश में मनाया जानेकला अद्वितीय थी । धर्मकुल में देव साक्षात् रहते है । यह अनुभव दर्शन करके हुआ । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पालडी (व्यास) ९ वाँ पाटोत्सव-शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. पू. महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पालडी (व्यास) का नौवाँ पाटोत्सव-शाकोत्सव ता. १५-२-१९ के दिन उत्साह पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) ने भक्तो को कथामृत का पान कराये ते । यहाँ के सभी हरिभक्त पाटोत्सव में ठाकुरजी का दर्शन करके शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए । भक्त छोटी-बड़ी सेवा का लाभ दिये । (कोठारीश्री पालडी व्यास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वीजापुर का चौथा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. पू. महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामी (महंतश्री गाँधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बीजापुर का चौथा पाटोत्सव और धनपुरा गाँव में कथा और शाकोत्सव ता. १३-२-१९ से ता. १७-२-१९ के बीच उत्साह पूर्वक मनाया गया । सग्.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद से श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण संगीत की मधुर सुर के साथ गाँव के अनेक भक्तोने कथा सुने । व्याख्यान माला में शास्त्री स्वामी रामकृष्णदाजी (कोटेश्वर गुरुकुल) श्रीहरि की महिमा और मुक्तात्मा वजीबा का जीवन कवन सुंदर रुप से किया गया । ता. १६-२-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा ठाकुरजी की आरती-शाकोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया । पूरे गाँव ने प.पू. महाराजश्री आशीर्वाद दिये । बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदाजी (कालुपुर) और शा. कुंजविबारी दासजीने सुंदर से किया था । ता. १७-२-१९ को कथा की पूर्णाहुति की आरती पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के हाथो द्वार हुआ । अनेक हरिभक्त यजमान बनकर सेवा किये । (श्री नरनारायणदेव आश्रित समस्त सत्संग समाज विजापुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (दोनो मंदिर) विहार का १२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. पू. महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार (दोनो) का पाटोत्सव क्रम १२ वाँ ता. २५-२-१९ को उल्लास के साथ मनाया गया। जिस के यजमान प.भ. बाबुभाई मणीलाल पटेल को अ.सौ. सांताबेन बाबुभाई पटेल आदि परिवारने लाभ लिया था।

ता. २५-२-१९ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक अन्नकूट आरती आदि विधिवत रुप से पूर्ण हुई । इस अवसर पर कालुपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी आदि संत आकर भगवान के महिमा का गुणगान किये थे । पूरे गांव के लोग लालजी महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये ।(कोठारीश्री विहार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल का १३ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से और स.गु. महंतश्री के.पी. स्वामी के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल का १३ वाँ पाटोत्सव ता. २८-२-१९ को उल्लास के साथ मनाया गया था।

इस अवसर पर प्रातः ठाकुरजी की महापूजा यजमान द्वारा की गयी। इसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी की षोडशोपचार अभिषेक विधिवत पूर्ण हुआ । इसके बाद ठाकुरजी की अन्नकूट आरती सभा में की गयी।

प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामीने सर्वोपरि श्रीहरि की महिमा बताये । यजमान परिवार प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारे थे । प.पू. महाराजश्री यजमान परिवार को श्रीहरि स्वरुप भेट देकर आशीर्वाद प्रदान किये।

इस अवसर पर कालुपुर, जेतलपुर, छपैया, मेहसाना, बीलीया, हिंमतनगर, मकनसर, कलोल और जूनागढ आदि तीर्थो से संत आये थे । अंत में पूरे सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये।

गाँव के युवक मंडल ने अच्छी सेवा दी । (शा. भक्तिनंदनदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कठलाल का २४ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन श्री स्वामिनारयण मंदिर कठलाल का २४ वाँ पाटोत्सव ता. १२-२-१९ के दिन उल्लास के साथ मनाया गया था।

इस अवसर पर ठाकुरजी की महापूजा यजमान परिवार द्वारा किया गया था।

संतोने ठाकुरजी का अभिषेक और अन्नकूट की आरती किये थे।

पाटोत्सव के प्रसंग पर सभा में जेतलपुर मंदिर के संत स.गु. शा. स्वामी भक्तिवल्लभदासजी, शा. भक्तिनंदनदासजी, शा. धर्मस्वरुपदासजी और पू. महंतश्री के.पी. स्वामी आदि संतोने कथा-वार्ता किये थे।

आगामी २५ वाँ पाटोत्सव रजत जयंती महोत्सव स्वरुप उल्लास से मनाया गया। यजमान परिवार ने संतो को साल देकर सन्मान किये थे । (शा. भक्तिनंदनदासजी अंजलि मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा नालंदा-२ तिसरा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मथुरा मंदिर के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायणमंदिर मोडासा नालंदा-२ में बिराजमान ठाकुरजी का तीसरा पाटोत्सव पूस वद-७ को प्रेमिलाबेन रजनीभाई पटेल के यजमान पद से हुआ । श्री घनश्याम मंडल की बहने भावपूर्वक अन्नकूट बनाकर श्रीहरि को चढाई थी। सच्चिदानंद स्वामीने कथा का सुंदर लाभ दिये थे ।(के.बी. प्रजापति)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई टिम्बा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा तथा स.गु. महंतश्री के.पी. स्वामी के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई टिम्बा का पाटोत्सव ता. १०-३-१९ को उल्लास पूर्वक मनाई गयी।

ठाकुरजीकी महापूजा में यजमान परिवार बैठकर लाभ लिये। जेतलपुर के मंदिर के संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोचार अच्छए से पूर्ण किया गया था। यजमान परिवार सभा में संतो की पूजा किये थे। जेतलपुर मंदिर से पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी, महंतश्री के.पी. स्वामी, श्याम स्वामी, शा. भक्तिवल्लभदासजी, दास स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी, धर्मेश भगत आदि संत मंडल द्वारा कथा-वार्ता कीर्तन करके अन्नकूट आरती किये। सभी हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए। (शा. भक्तिनंदनदासजी - अंजली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम सत्संग सभा

जेतलपुरधाम निवासी संकल्प सिद्धदेव परमकृपालु श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दिव्य सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. पी.पी. स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन से जेतलपुर मंदिर में प्रति मास १७ तारीख का विशाल सत्संग सभा होती है । इस सभा में पू.पी.पी. स्वामीने सर्वोपरी श्रीहरि और धर्मकुल की महिमा समझाये

थे । पू. पी.पी. स्वामीने सर्वोपरी श्रीहरि और धर्मकुल की महिमा समझाये थे । इस अवसर पर सभा में भक्तिनंदन स्वामी (अंजली), ब्र. शांतदेवानंद स्वामी (छपैया) आदि संतोने भी भगवान की बात किये थे ।

जेतलपुर और आस-पास के गाँवो के हरिभक्त सत्संग सभा का लाभ ले ऐसा अनुरोधकिये । अंत में श्रीहरिनाम स्मरण पुन किया गया । ऐसे सुंदर कार्य मे कई हरिभक्त यजमान बनकर लाभ ले । (के.पी. स्वामी - महंतश्री जेतलपुर)

अडालज गाँव में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीहरि का प्रसादी का गाँव अडालज जहाँ पर रुदवाईने अद्‌भुत वाव बनाकर स्वयं भगवान आयेगे ऐसा बोली, कि श्रीहरि सब का कल्याण करेगे । ऐसे गाँव में १७-३-१९ को सत्संग सभा का आयोजन हुआ । जिस में यजमान प.भ. महेन्द्रभाई पटेल ह. पुत्र शंकर पटेल (शिकागो) उवारसदवाले परिवार सहित आये थे । इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, यजमान परिवार वहाँ आकर ठाकुरजी की आरती उतारे सभा में आये । सभा में जेतलपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, तथा पू. शा. पी.पी. स्वामीने कथा वार्ता का लाभ दिये । इस अवसर पर कई तीर्थो से संत आये थे । यजमान परिवार ने प.पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था । (शा. भक्तिनंदन स्वामी अंजली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर (गाँधीनगर) ८७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर (जि. गांधीनगर) ८७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. नारायमभाई मगनभाई पटेल परिवार तरफ से ता. ९-३-१९ के दिन उल्लास से मनाया गया था ।

इस अवसर पर गांधीनगर मंदिर से पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी और कोटेश्वर गुरुकुल के शा. व्रज स्वामी आदि संतोने ठाकुरजी का अभिषेक और अन्नकूट तथा आरती लेकर वार्ता-धुन गाये थे । सभी हरिभक्त खुश हुए । (कोठारी नारायणभाई)

शिलज गाँव में दूसरी सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से गांधीनगर मंदिर के महंत पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से शीलज गाँव में हर महीने सत्संग सभा होती है । प्रत्येक सभा में अलग-अलग संतो द्वारा सुंदर सत्संग हो ऐसा प्रयास किया जाता है ।

शुरुआत में पू. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । दूसरी सभा ता. १२-३-१९ को हुई थी । जिस में स.गु. शा. राम स्वामी (आदरजवाले) ने कथा सुनाये थे । यहाँ पर निवास करने वाले सभी हरिभक्तो से अनुरोधहै कि कथा का लाभ उठाये । (हीतेन्द्रभाई पटेल - शीलत)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

रणजीतगढ हरिकृष्णधाम सत्संग सभा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. शा. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से श्रीकृष्णहरिधाम रणजीतगढ में हर महीने के तीसरे रविवार को सत्संग सभा का सुंदर आयोजन होता है । जिसमें मुली, सुरेन्द्रनगर, मोरबी के संतो द्वारा कथा वार्ता का लाभ दिया जाता है । ता. १९-३-१९ के दिन मूली में धर्मजीवन स्वामीने शिक्षापत्री के उपर कथा किये थे । जिस में यहाँ के कई हरिभक्तोने लाभ लिया था । सभा का संचालन स्वामी विश्ववंदनदासने किया था । अंत में सभी लोग प्रसाद लेकर धन्य हुए । यहाँ के संत मंडल गाँवो में सत्संग की सुंदर प्रवृत्ति करते है । (प्रति अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

ध्रांगध्रा में सत्संग सभा

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से ध्रांगध्रा में हरिभक्तो द्वारा अलग-अलग हरिभक्तो के यहाँ सत्संग सभा होती है । ता. ११-३-१९ को श्री स्वामिनारायण अंक के प्रतिनिधी प.भ. अनीलभाई दूधरेजिया के नये मकान में सत्संग पूर्ण हुआ था । इस अवसर पर रणजीतगढ मंदिर से पू. भक्ति स्वामी और उनके संत मंडलने कथा-वार्ता किये थे । (कोठारीश्री ध्रांगध्रा स्वा. मंदिर)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से हमारे कोलोनिया हिन्दु स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े महराजश्री पू. बिन्दुराजा श्री सुव्रतकुमार और श्री सौम्यकुमार के साथ दर्शन हेतु आये थे । पार्षद श्री भरत भगत के सुंदर प्रबन्धद्वारा दोनो पू. भानजभाई का जन्म दिन ता. १६-२-१९ शनिवार जया एकादशी के दिन मनाया गया था । अपने युवक हरिभक्तोने नंद रचित कीर्तन गाये थे । प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी हरिभक्तो को इन दोनो का ख्याल रखे तथा सत्संग में ओत-प्रोत रहे, सभी तरह की प्रगति हो स्वस्थ रहे आशीर्वाद दिये थे ।

पू. बिन्दुराजा के साथ सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार और सत्संगी बालक मिलकर केक काटे थे । यजमान प्रसाद लेकर धन्य हुए ।(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडतालधाम एलनटाउन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत डी.के. स्वामी की प्रेरणा से हमारे श्री स्वामिनारायणं दिर एलन-टाउन में हमारे प.पू. बड़े महाजश्री ठाकुरजी के दर्शन हेतु आये थे । सभी हरिभक्तो को खुश होकर आशीर्वाद प्रदान किये ।

महंत स्वामीने कथा-वार्ता करके सभी को लाभ दिये थे । सभी हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री का स्वागत पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये ।(प्रवीण शाह)

छपैयाधाम पारसीप श्री स्वामिनारायण मंदिर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से हमारश्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीप की छपैयाधाम मंदिर में ता. २२-२-१९ शनिवार के दिन सायं ५ से ८ तक प.पू. बड़े महाराजश्री पू. बिन्दु राजा, श्री सुव्रतकुमार और श्री सौम्यकुमार दर्शन के लिये आये थे । यहाँ के महंत स्वामी अभिषेकप्रसाददासजीने प.पू. बड़े महाराजश्री और दोनो भाणजो को माला पहनाकर स्वागत किये थए । मंदिर के मुख्य हाल में संत हरिभक्तो द्वारा रचित नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन-भजन और धुन की गयी थी । हमारे आई.एस.एस.ओ. चैप्टर से कई हरिभक्त आये थे । अच्छा केक भगवान के सामने काटकर पू. बड़े महाराजश्री, दोनो भानजे, पू. बिन्दुराजा (बहनो की सभा में सभी ने मिलकर जन्म दिन मनाये थे । प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । पूज्य स्वामीजीने जन्म की शुभेच्छा दिये । तथा हरिभक्तोने धर्मकुल की महिमा बताये । यजमानो का सन्मान करके एवम् सभी को प्रसाद पूर्ण किया गया । सभी लोग धन्य हुए ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन का १८ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के महंत सुव्रत स्वामी और महेन्द्र भगत की प्रेरणा से ता. १२-३-१९ मंगलवार को शायं ५ से ८ के बीच श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन का १९ वाँ पाटोत्सव उल्लासपूर्वक पूर्ण हुआ ।

सर्व प्रथम सभा में संत हरिभक्तो द्वारा भजन-कीर्तन किया गया । संतोने नींव से लेकर शिखर तक सहयोग देने वालो की प्रसंसा किये थे । ठाकुरजी का षोडशोपचार विधिपूर्वक किया गया था । कई हरिभक्त ठाकुरजी का अभिषेक और अन्नकूट का दर्शन करके खुश हुए । सेवा करने वाले यजमानो का सम्मान किया गया । तथा सभी लोग प्रसाद लेकर धन्य हुए ।

ता. ३-२-१९ शनिवार के दिन दोपहर १२ से ३ बजे तक ह्युस्टन के बेलेन्ड पार्क में डॉ. फाल्गुनि पटेल और डॉ. हरिश पटेल ने स्वास्थ्य के लिये सुंदर सेमिनार करके स्वास्थ्य के विषय में जानकारी, उपचार, उपाय बड़ी स्क्रिन पर दिखाये थे ।(प्रवीण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

श्री नरनारायणदेव का १९७ वाँ पाटोत्सव महोत्सव

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव ताबा के श्री स्वामिनारायण मंदिर मीठाखली
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हस्त
श्रीमद् भागवत त्रिदिनात्मक रात्रीय पारायण

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव
दि. ८ से ११ मई-२०१९

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव ताबा के श्री स्वामिनारायण मंदिर बायल (ढांखरोल) तह. मोडासा, जि. अरवल्ली
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हस्त

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव
दि. ११ से १४ मई-२०१९

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in
Follow Us @ nndkalupurmandir
Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104

Prafull Kharsani

(१) कालुपुर मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती के फुलदोलोत्सव का दर्शन । (२) श्री नरनारायणदेव जयंती के फुलदोलोत्सव अवसर पर पूजा का लाभ लेते हुए यजमान श्री जतीनभाई, रितेशभाई और परिवार के लोग । (३) मेहसाना मंदिर में रंगोत्सव दर्शन । (४) न्यु राणीप मंदिर में श्री नरनारायणदेव की जयंती की आरती दर्शन । (५) श्री स्वामिनारायण म्युजियम के आँठवे स्थापना दिवस भव्य रुप से मनाया गया ।